भारत सरकार टकसाल, नोएडा

मिनिरत्न श्रेणी-I सीपीएसई

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई

मुद्रावाणी-2014

"प्रवेशांक"

सरंक्षक

एम. सी. बैलप्पा
(महाप्रबंधक)

मुख्य संपादक

यशपाल सिंह
प्रबंधक (तकनीकी)

संपादक

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल
उप प्रबंधक (राजभाषा)

प्रकाशक-मंडल

प्रवीण गुप्ता
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

संतोष जेठी
अधिकारी (तकनीकी)

उत्तम सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक

प्रदीप कुमार
वरिष्ठ संचालक

रामाशीष प्रसाद
वरिष्ठ संचालक

अजय कुमार शाक्य
संचालक

विशेष सहयोग

रजनी कुमारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्रिका का नामकरण

यशपाल सिंह
प्रबंधक (तकनीकी)

आवरण पृष्ठ साज-सज्जा

रामाशीष प्रसाद
वरिष्ठ संचालक

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	अध्यक्ष व प्रब. निदे.	3
2.	संदेश	निदेशक (मा.सं.)	4
3.	संदेश	निदेशक (तकनीकी)	5
4.	संदेश	महाप्रबंधक	6
5.	मुख्य संपादकीय	यशपाल सिंह	7
6.	संपादकीय	योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल	8
7.	सरस्वती वंदना	यशपाल सिंह	9
8.	भा.स.ट., नोएडा के कुशल प्रशासकः महाप्रबंधकगण	लिल्ली कुट्टी जोस	10
9.	भारतीय मुद्रा का इतिहास	करन सिंह जाटव	11
10.	भारत सरकार टकसाल, नोएडा : प्रगति के 25 वर्ष	कैलाश चंद शर्मा	12
11.	उत्पादन आंकड़े : वर्ष 1988 से अब तक		14
12.	करगिल शहीदों को अर्पित	राम गोपाल	15
13.	नारी	बंदना मोहन	15
14.	संत की सीख	प्रवीण गुप्ता	16
15.	यादें : जीवन के झरोखों से	यशपाल सिंह	17
16.	कमाई की रोटी	प्रमोद कुमार द्विवेदी	20
17.	अभिप्रेरण	रामाशीष प्रसाद	21
18.	विश्वास	बंदना मोहन	22
19.	संदेश	नो. मिंट श्रमिक संघ	23
20.	संदेश	कार्य समिति	23
21.	विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियां		24
22.	वसंत पंचमी : एक उल्लास	रजनी कुमारी	25
23.	बाल श्रम	गोविंद कुमार	26
24.	सफलता का मार्ग	शशि भूषण	27
25.	गूंज	योगेन्द्र कुमार शर्मा	28
26.	करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान	गोरखनाथ यादव	29
27.	भ्रष्टाचार	करन सिंह जाटव	30
28.	विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियां		31
29.	उत्तराखंड : इतिहास एवं परिचय	उत्तम सिंह	32
30.	हिन्दी भाषा और राजभाषा	योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल	35
31.	सूचना का अधिकार एवं पारदर्शिता	प्रकाश कुमार	37
32.	हम चिल्लाते क्यों हैं गुस्से में ?	प्रवीण गुप्ता	38
33.	साहिल न मिला	उत्तम सिंह	39
34.	गुदगुदी		39
35.	मुंशी प्रेमचंद : कलम का सिपाही	रजनी कुमारी	40
36.	पैगाम	शशि भूषण	42
37.	संयोग	प्रमोद कुमार द्विवेदी	43
38.	एक कांच की बरनी और दो कप चाय	पूजा सारस्वत	45
39.	मोक्ष की प्राप्ति	रामसेवक त्यागी	46
40.	मां का दिल	उत्तम सिंह	47
41.	राजस्थानी वीरता	हरिओम मीना	48
42.	नोएडा मिंट श्रमिक संघ : रजत जयंती वर्ष 2014	रामाशीष प्रसाद	49
43.	आज का भारत	राजेश कुमार शर्मा	51
44.	श्रद्धांजलि		51
45.	प्रतिक्रिया		52

गृह पत्रिका केवल सदस्यों के लिए
Website : www.http://igmnoida.spmcil.com
E-mail : igm.noida@spmcil.com

एम.एस. राणा
M.S. RANA
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Wholly owned by Government of India)

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका ''मुद्रावाणी'' का प्रवेशांक प्रकाशित होने जा रहा है जिसमें टकसाल के कार्यकलाप तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक गतिविधियों की झलक मिलेगी।

टकसाल पूरे देश की मुद्रा की आवश्यकता को पूरी करती है एवं मुद्रा उत्पादन से जुड़े सभी कर्मी अपने अथक एवं सतत परिश्रम से मुद्रा को भौतिक रूप देते हुए आर्थिक गतिविधि में अपना अमूल्य योगदान करते हैं। कार्मिकों द्वारा इस तरह की गुणात्मक एवं सृजनात्मक क्रियाएं हमारे मानव संसाधनों का सही उपयोग है।

जिस तरह से भारत सरकार टकसाल, नोएडा का अलग अस्तित्व है, इससे जुड़े हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी अलग पहचान है और इस पहचान को रूपायित करने तथा उनकी विभिन्न कलाओं को अभिव्यक्त करने के लिए टकसाल की गृह पत्रिका ''मुद्रावाणी'' एक सशक्त माध्यम होगी। इसके माध्यम से हमें अपने देश की सांस्कृतिक एवं भाषायी एकता की भी झलक मिलेगी।

''मुद्रावाणी'' का प्रकाशन एक रचनात्मक सृजन है एवं मुझे आशा है कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इस सृजनात्मक प्रक्रिया के माध्यम से बाहरी गतिविधियों के साथ तालमेल रखते हुए एक सहज एवं सरल संवाद की स्थिति कायम करने में सफल होंगे।

अतः मैं अपने तथा एसपीएमसीआईएल निगम मुख्यालय की ओर से इकाई की गृह पत्रिका ''मुद्रावाणी'' के सफल प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

एम.एस. राणा

(एम.एस. राणा)
अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक

Tel.: 011-23701225-26
011-43582200
16 वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110 001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110 001
फैक्स/Fax : 011-23701223
E-mail : spmcil@rediffmail.com

डा. मनोरंजन दास एमबीए (आईसीपीई-यूरोप), पीएचडी
Dr. MANORANJAN DASH MBA, (ICPE-Europe), Ph.D
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Wholly owned by Government of India)

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा अपनी रजत जयंती के पुनीत अवसर पर गृह पत्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रही है। वस्तुतः गृह पत्रिका इकाई के समस्त वर्ग के कर्मियों को बौद्धिक और भावनात्मक स्तर पर एक दूसरे से जुड़ने के लिए सेतु का कार्य करती है। निश्चित ही, यह सभी में वैचारिक एवं पारस्परिक सहयोग की भावना का संचार करेगी तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

यहाँ यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि विगत वर्षों में, नोएडा टकसाल, उत्तरोत्तर उत्पादन के नए शिखर की ओर अग्रसित होते हुए राजभाषा कार्यों में भी प्रगति कर रही है, परिणामस्वरूप, इकाई को वर्ष 2012-13 की अवधि में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय कार्य करने के लिए ''श्री शंकर दयाल सिंह चल वैजयंती'' से सम्मानित किया गया है जिसके लिए इकाई के समस्त कर्मियों को मेरी हार्दिक बधाई। साथ ही, मेरी अपेक्षा है कि आगे भी इकाई राजभाषा संबंधी अपने दायित्वों का पूर्ण निष्ठा व प्रतिबद्धता के साथ निर्वहन करेगी।

मैं, पुनः संपादन व प्रकाशन मण्डल को इस सराहनीय कार्य के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगी।

मनोरंजन दास

(डॉ. मनोरंजन दास)
निदेशक (मा०सं०)

16 वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110 001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110 001
फोन/ Tel.: 91-11-23701143 (D), फैक्स/Fax : 91-11-43582291, ई–मेल/e-mail : dr.dash@spmcil.gov.in
वैब/Web :www.spmcil.com

प्रमोद नागनाथ राडकर
PRAMOD NAGNATH RADKAR
निदेशक (तकनीकी)
Director (Technical)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Wholly owned by Government of India)

संदेश

हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा, अपनी रजत जयंती वर्ष में गृह पत्रिका का प्रथम वार्षिकांक प्रकाशित कर रही है। मुझे यह रेखांकित करने में गर्व हो रहा है कि अपने आकार और मानवशक्ति के परिप्रेक्ष्य में यह इकाई भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की सबसे छोटी इकाई होने के बावजूद उत्पादन क्षेत्र में अग्रणी है। विगत वर्षों में इस इकाई ने निर्धारित उत्पादन लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त किया है और मुझे विश्वास है कि वर्ष 2014-15 में भी नोएडा टकसाल, उत्पादन के क्षेत्र में नए मानदंड स्थापित करेगी। आजादी के पश्चात भारत सरकार द्वारा स्थापित यह प्रथम और सर्वोन्नत टकसाल है। निकट भविष्य में इसे और आधुनिक बनाने की प्रक्रिया जारी है।

गृह पत्रिका, संस्थान की विविध गतिविधियों का दर्पण होती है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों व कार्मिकों को अपनी रचनात्मकता और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का न केवल एक प्रभावशाली मंच उपलब्ध होगा वरन् उनमें अनुशासन व परस्पर सहयोग की भावना का भी विस्तार होगा।

अंत में, मैं पत्रिका से जुड़े सभी कर्मियों को अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूँ और इसके तथा नोएडा टकसाल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(पी.एन. राडकर)
निदेशक (तकनीकी)

16 वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली **- 110 001**
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110 001
फोन/ Tel.: 91-11-23701222 (D), फैक्स/Fax : 91-11-23701223, ई-मेल/e-mail : dt@spmcil.com
वैब/Web :www.spmcil.com

एम.सी. बैलप्पा
M.C. BYLAPPA
महाप्रबंधक
General Manager
भारत सरकार टकसाल, नोएडा
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
India Government Mint, Noida
(Wholly owned by Government of India)

संदेश

हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा, राष्ट्र को समर्पित सेवा के 25 वर्ष पूर्ण करने के गौरवशाली एवं ऐतिहासिक अवसर पर गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' का प्रकाशन बड़े उत्साह के साथ कर रही है। इस इकाई ने सिक्का उत्पादन के क्षेत्र में निगमीकरण के पश्चात अप्रत्याशित प्रगति की है। वित्तीय वर्ष 2013-14 में इकाई ने 2765 मिलियन पीसीस सिक्कों के उत्पादन का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। साथ ही, राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में भी पूरी निष्ठा व लगन के साथ कार्य कर रही है। फलस्वरूप 2012-13 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय कार्य करने के लिए हमारी इकाई को निगम के स्थापना दिवस समारोह दिनांक: 10 फरवरी, 2014 के अवसर पर ''श्री शंकर दयाल सिंह चल वैजयंती'' से पुरस्कृत किया गया है। साथ ही, 2012-13 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु इकाई को नराकास, नोएडा द्वारा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार से सरकारी काम-काज में इसके अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ाना है। हमारी इकाई हिंदी भाषी क्षेत्र में स्थित है। अतः हमें शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य पूरी निष्ठा व प्रतिबद्धता से हिंदी में ही करना है। विगत वर्ष में माननीय संसदीय समिति द्वारा हमारी इकाई के राजभाषा विषयक कार्यों का निरीक्षण किया गया और इसके उपरांत निश्चित रूप से इकाई ने राजभाषा कार्यों में प्रगति की है।

गृह पत्रिका, इकाई के समस्त कर्मियों को अपने रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक सहज व समावेशी माध्यम उपलब्ध कराएगी तथा उनमें अनुशासन व परस्पर सहयोग की भावना सुदृढ़ करेगी, ऐसा मुझे विश्वास है। पत्रिका से जुड़े सभी कर्मियों को मेरी ओर से प्रवेशांक की शुभकामनाएं।

मुझे आपके समक्ष पत्रिका को प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

शुभकामनाओं सहित,

एम सी बैलप्पा

(एम.सी. बैलप्पा)
महाप्रबंधक

मुख्य संपादकीय

भारत सरकार टकसाल, नोएडा के कर्मकारों का रचनात्मक संयुक्त प्रयास इकाई की गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के प्रवेशांक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्र की धात्तुय मुद्रा को गढ़ने की खनखनाती आवाज से एकाकार हो चुकी प्रतिभाएं अब साहित्यिक रचनात्मकता की प्रतिध्वनि 'मुद्रावाणी' के रूप में साकार होगी और औजारों से खेलने वाले हाथ कलम की कलात्मकता का कमाल दिखाएंगे।

देश के विभिन्न प्रांतों में अवस्थित एसपीएमसीआईएल की प्रत्येक इकाई करेंसी नोट, प्रतिभूति उत्पाद, कागज व सिक्कों के उत्पादन के द्वारा राष्ट्र की सेवा में पूर्ण निष्ठा व समर्पित भावना से अहर्निश लगी हुई है। इन इकाइयों का इतिहास बड़ा ही गौरवशाली है। कुछ इकाइयां तो राष्ट्र सेवा में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व काल से ही समर्पित रही हैं। नोएडा इकाई ने इसी दरम्यान अपने कार्यकाल के पच्चीस गौरवशाली वर्ष पूर्ण किए हैं। यह टकसाल मानवबल के परिप्रेक्ष्य में एसपीएमसीआईएल की सबसे छोटी इकाई है, किन्तु उत्पादन के क्षेत्र में इस इकाई ने वर्ष-दर-वर्ष नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। निगमीकरण के पश्चात वर्ष 2008-09 में 1196.274 मिलियन नग सिक्कों से लेकर वर्ष 2013-14 में 2765 मिलियन नग सिक्कों के उत्पादन के शिखर को छुआ है, जो कि इकाई के समस्त कर्मियों की लगन, प्रतिबद्धता तथा समर्पण को रेखांकित करता है। भौतिक आवश्यकताओं को पूर्ण करते हुए कर्मियों में सृजनात्मक व बौद्धिक प्रतिभाओं को मुखरित करने के लिए इकाई की गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' एक सशक्त माध्यम बन सके यही मंगलकामना है। इस सकारात्मक प्रयास के यज्ञ की पावन ऋचाओं को आपकी सहयोगात्मक प्रतिक्रियाएं एवं अनुभव रूपी समिधाएं और अधिक समृद्ध व विकासोन्मुख बनाएंगी, ऐसी मेरी आकांक्षा है।

यशपाल सिंह
प्रबंधक (तकनीकी) एवं
मुख्य संपादक

संपादकीय

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की रजत जयंती की मधुर स्मृति में इसकी गृह-पत्रिका 'मुद्रावाणी' का प्रवेशांक भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम के नई दिल्ली स्थित निगम मुख्यालय तथा विभिन्न प्रांतों में अवस्थित इसकी समस्त इकाइयों और अन्य माननीय सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। उत्पादन से जुड़े संस्थान में, जिसके प्रत्येक कर्मी की सर्वोच्च प्राथमिकता गुणवत्ता के साथ निर्धारित उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करना हो, उसके द्वारा सृजनात्मक कार्य के लिए कुछ पल निकालकर पत्रिका के लिए अपनी रचना के माध्यम से योगदान प्रशंसनीय है।

वरिष्ठ अधिकारियों की प्रेरणा व मार्गदर्शन तथा रचनाकारों के सहयोग एवं प्रयास से यह कार्य संपन्न हो सका है। उनके आलेखों, कविताओं से सुसज्जित पत्रिका का यह प्रवेशांक अपनी खुशबू से पाठकों को महकाएगा, मेरा ऐसा विश्वास है।

भाषा एक प्रवाहमान नदी है जिसमें वैचारिक तरंगों को एक निश्चित आयाम में निबद्ध कर देना, रचना को रूप देना है। यह एक नैसर्गिक गुण है जिससे प्रकृति ने सभी मनुष्यों को नवाजा है। जीवन की आपाधापी में, अपने कार्य के अलावा, अपने विचारों, अनुभवों को शब्दों में पिरोना किसी तपस्या से कम नहीं। इस संस्थान के ऐसे ही कर्मियों ने अपनी कविता, कहानी तथा आलेखों के माध्यम से पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग दिया है जो संभवतः आपको अच्छी लगे। हमारा यह प्रथम प्रयास है। निश्चित रूप से इसमें बहुत सारी कमियां होंगी। हमें आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

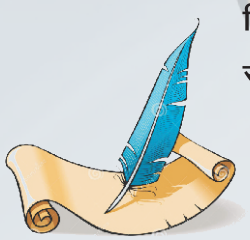

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल
उप प्रबंधक (राजभाषा)

सरस्वती वंदना

हे माता सरस्वती वर दे, वर दे, वर दे,
वर दे, वर दे, वर दे, हे मां सरस्वती वर दे।
हे चंद्रिका, सुरवंदिता, वसुधामयी हंसासना,
सौम्या, तू ही वंद्या, शुभदामयी श्वेतासना,
ज्ञानदायिनी विद्यामाता, कंठ मधुर कर दे,
हे माता सरस्वती वर दे, वर दे, वर दे।

त्रयीमूर्ति, त्रिकालज्ञा, त्रिगुणात्मना, हे श्रीप्रदा,
महाबला, हे महाफला, महामाया, हे वरप्रदा,
महाकारा, महाभागा, मंगल शुभ कर दे,
हे माता सरस्वती वर दे, वर दे, वर दे।

हे चित्रागंधा चित्रांबरा, हे चित्रामाल्याविभूषिता,
हे महाभद्रा, ज्ञानमुद्रा तू ही चंद्रलेखविभूषिता,
हे चंद्रवदना निरंजना, अमृत रस भर दे,
हे माता सरस्वती वर दे, वर दे, वर दे।

विमला विश्वा वैष्णवी, हे वाग्देवी सौदामिनी,
ब्राह्मी कांता गोमती, हे ज्ञानदेवी मालिनी,
हे भामा शुभदा भारती, निर्मल मन कर दे,
हे माता सरस्वती वर दे, वर दे, वर दे।

यशपाल सिंह
प्रबंधक (तकनीकी)

सुख परिग्रह के बाहुल्य से नहीं, हृदय की विशालता से बढ़ता है। -रस्किन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा के कुशल प्रशासक : महाप्रबंधक गण

श्री आर. रामदास

28-01-1985 से 31-08-1989

श्री एस.पी. वर्मा

08-07-2011 से 30-05-2013

श्री जी.आर. कहाते

07-09-1989 से 30-04-1991

श्री विश्वजीत बर्मन

12-01-2009 से 07-07-2011

श्री एस.डी. स्वामी

24-05-1991 से 14-06-1993

श्री एम.सी. बैलप्पा

30-05-2013 से अब तक

श्री अश्विनी कुमार

20-12-2005 से 12-01-2009

श्री वी.के. खोसला

09-07-1993 से 30-09-1995

श्री पी.के. दास

07-08-2001 से 09-12-2005

श्रीमती उषा निगम

01-10-1995 से 12-08-1996

श्री ए. एम. गुरहा (कार्यवाहक)

01-02-2001 से 06-08-2001

श्री एस.डी. दाधीच

06-01-1997 से 30-01-2001

श्री एस. बागची (कार्यवाहक)

12-08-1996 से 05-01-1997

प्रस्तुति
लिल्ली कुट्टी जोस
महाप्रबंधक की निजी सचिव

हमारा अहंकार ही है जिसके कारण हमें अपनी आलोचना सुनकर दुख होता है। -मेरी कैनेडी

भारतीय मुद्रा का इतिहास

भारत में ब्रिटिश मुद्रा का जिस समय प्रकाशन हुआ उस समय तक ब्रिटेन के राज सिंहासन पर कुल छह राजा-रानी बैठे थे : 1. महाराजा चतुर्थ विलियम 2. महारानी विक्टोरिया 3. महाराजा एडवर्ड सप्तम 4. महाराजा जार्ज पंचम 5. महाराजा एडवर्ड अष्टम 6. महाराजा जार्ज षष्ठम। तत्कालीन ब्रिटिश नियमानुसार प्रत्येक मुद्रा में ब्रिटेन के ही राजा-रानी का प्रतिकृति/चित्र छापा जाता था। ब्रिटिश मुद्राओं में एक लक्ष्य करने वाली बात यह थी कि जिस किसी भी राजा-रानी की प्रतिकृति/चित्र छापा जाता था वह उसके पहले राजा - रानी की प्रतिकृति/चित्र के विपरीत मुख करके छापा जाता था। इस नियम को मानते हुए राजा चतुर्थ विलियम की मुद्रा में उनकी प्रतिकृति/चित्र का मुख दांयी ओर, राजा जार्ज पंचम का मुख बांयी ओर, राजा जार्ज षष्ठम का मुख बांयी ओर किया गया। पंचम व षष्ठम जार्ज के मध्यवर्ती काल में राजा एडवर्ड अष्टम की प्रतिकृति/चित्र से संबंधित कोई मुद्रा भारत में प्रकाशित नहीं हुई, क्योंकि उनका राजत्व काल बहुत संक्षिप्त था।

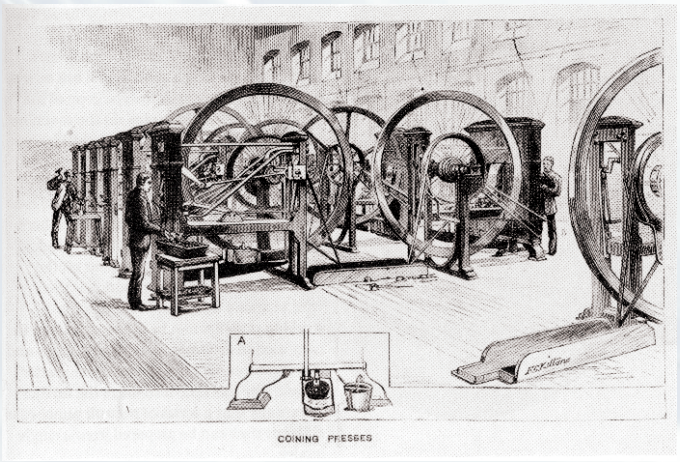

वर्ष 1835 में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' ने प्रथम महाराजा-महारानी की प्रतिकृति/चित्र से संबंधित मुद्रा छापना शुरू किया। नवंबर 1858 में ब्रिटिश संसद के नियमों द्वारा सरकार एवं प्रशासन का 'ईस्ट इंडिया कंपनी' से 'काउंसिल ऑफ स्टेट्स' को ब्रिटिश राज्य के अधीन हस्तांतरण किया गया था। इस प्रकार 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के लंबे शासन का अंत हुआ। वर्ष 1862 से परिचालित होने वाले सिक्कों के अग्र व पृष्ठ भाग का नमूना बदला गया तथा 'ईस्ट इंडिया कंपनी' का नाम हटा दिया गया। वर्ष 1877 में विक्टोरिया ने भारत की साम्राज्ञी का पद ग्रहण किया तथा सिक्कों पर 'रानी' शब्द का स्थान 'साम्राज्ञी' शब्द ने लिया। भारतीय सिक्कों पर उसके पश्चात 1947 तक 'राजा' व 'सम्राट' शब्द अंकित होते रहे।

15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ तथा 1950 तक सिक्कों के अग्र व पृष्ठ भाग का नमूना वही रहा जो 1947 से पूर्व था। 26 जनवरी, 1950 में भारत को गणतंत्र घोषित किया गया तथा सिक्कों के अग्र भाग पर राजा की प्रतिमा के स्थान पर 'अशोक स्तंभ' गणतंत्र का चिह्न रखा गया था और राजा के नाम के स्थान पर 'भारत सरकार' लिखा गया। 1 रुपये, 1/2 रुपया और 1/4 रुपये के पृष्ठ भाग पर अनाज की बालियों का जोड़ा चिंहित किया गया था। इसके बीच में रोमन संख्या में उसकी कीमत दर्शाई गई। अन्य सिक्कों में 2 आना, 1 आना व 1/4 आना के पृष्ठ भाग पर सांड़ तथा तांबे के एक पैसे के सिक्के पर उड़न घोड़े के चित्र अंकित थे। ये सिक्के 1956 तक चले। 1956 में सिक्कों की दशमलव प्रणाली का प्रचलन हुआ। इस प्रणाली में 1 रुपये, 50, 25, 20, 5, 3, 2, 1 पैसे के सिक्के जारी किए गए। हिंदी में 'भारत' व अंग्रेजी में 'इंडिया' शब्दों ने 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया' शब्द का स्थान लिया।

करन सिंह जाटव
कनिष्ठ तकनीशियन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा
प्रगति के 25 वर्ष

नोएडा की टकसाल भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्थापित की जाने वाली प्रथम टकसाल है। दरअसल, सिक्कों की मांग व पूर्ति के मध्य 1970-1980 के दशक में बढ़ते अंतर को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने 1984 में नोएडा में प्रतिवर्ष 2000 मिलियन सिक्के की उत्पादन क्षमता वाली नई टकसाल स्थापित करने का आदेश जारी किया। इस टकसाल के निर्माण हेतु जनवरी 1986 में सरकार द्वारा लगभग रु. 30 करोड़ लागत की परियोजना की स्वीकृति प्रदान की गयी थी। मेटलर्जिकल एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट (मेकान) को सलाहकार नियुक्त किया गया। भवन, सड़क, नालियों, जल-उपचार एवं आपूर्ति गृह के निर्माण एवं आंतरिक विद्युतिकरण के लिए राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम (एनबीसीसी) की सेवा ली गई तथा परियोजना की देख-रेख हेतु श्री आर.रामदास, महाप्रबंधक को भा.स. टकसाल, हैदराबाद से नोएडा भेजा गया था। परम संतोष का विषय है कि यह टकसाल अपने निर्धारित समय में स्थापित हो गयी एवं 01 जुलाई, 1988 को राष्ट्र के नाम समर्पित करते हुए सर्वप्रथम इस टकसाल में फेरिटिक स्टेनलेस स्टील के सिक्कों का उत्पादन किया गया जो 10 पैसे, 25 पैसे, 50 पैसे एवं 1 रु. मूल्यांक के थे।

स्टेनलेस स्टील के प्रयोग द्वारा क्यूप्रो-निकल सिक्कों की तुलना में उत्पादन लागत में महत्वपूर्ण कमी लायी गई। प्रारंभ में कोरे सिक्कों की आपूर्ति विदेशी आयात पर आधारित रही परंतु 1990 के दशक में भारतीय इस्पात प्राधिकरण द्वारा फैरिटिक स्टेनलेस स्टील की स्ट्रीप्स का स्वदेशी उत्पादन प्रारंभ कर देने से विदेशी मुद्रा की बचत भी होने लगी। उत्पादकता बढ़ाने के प्रयास प्रारंभ से ही जारी किए गए। इसीलिए सिक्का बनाने की नवीनतम तकनीक एवं विधियों को अपनाते हुए विश्व की आधुनिकतम तीव्र गति वाली कॉयनिंग प्रैस एवं स्वचालित यंत्रों से सुसज्जित गणना मशीनों की स्थापना की गयी। शूलर प्रैसों की विशेषता है कि तीव्र गति 600-650 सिक्का प्रति मिनट के उपरांत भी ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण हेतु ध्वनि निरोधक आवरण से सभी कॉयनिंग प्रैसें सुसज्जित हैं। सिक्का मुद्रण विभाग में उत्पन्न होने वाली ध्वनि का स्तर 80 डेसिबल्स से नीचे नियंत्रित किया गया है। प्रदूषण मुक्ति हेतु सड़कों के दोनों ओर एवं खाली पड़ी जमीन पर एवं आवासीय कालोनी में प्रचुर संख्या में हरे-भरे वृक्ष लगाए गए हैं।

उच्च कार्य क्षमता बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में मशीनीकरण किया गया था, परंतु हमारे देश में लाभकारी रोजगारपरक आवश्यकताओं को शायद ध्यान में रखा गया हो, इसीलिए मेटेरियल हैंडलिंग एवं ट्रांसपोर्टेशन के क्षेत्र में ज्यादा स्वचालीकरण नहीं किया गया था। वैयक्तिक प्रबंधन, उत्पादन एवं गणना, नियंत्रण एवं वित्तीय लेखा आदि कार्य के लिए प्रारंभ से ही कम्प्यूटर सुविधा उपलब्ध रखी गयी है। इस टकसाल में आज लगभग 450 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा को अनुकरण के द्वारा सीखता है, व्याकरण के सहारे नहीं। - धीरेन्द्र वर्मा

भारत सरकार द्वारा 02 सितंबर, 2005 को निगमीकरण के संबंध में लिए गए निर्णय के अनुसरण में 13 जनवरी, 2006 को पूर्णतः स्वामित्वाधीन कंपनी ''भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड'' की स्थापना हुई। तदनुकूल भारत सरकार ने कंपनी से संबंधित समस्त परिसंपत्तियों एवं दायित्वों का स्थानांतरण 10 फरवरी, 2006 को ''भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड'' के नाम कर दिया। इसके बाद से विकास पथ पर पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

उत्पादन का आईना

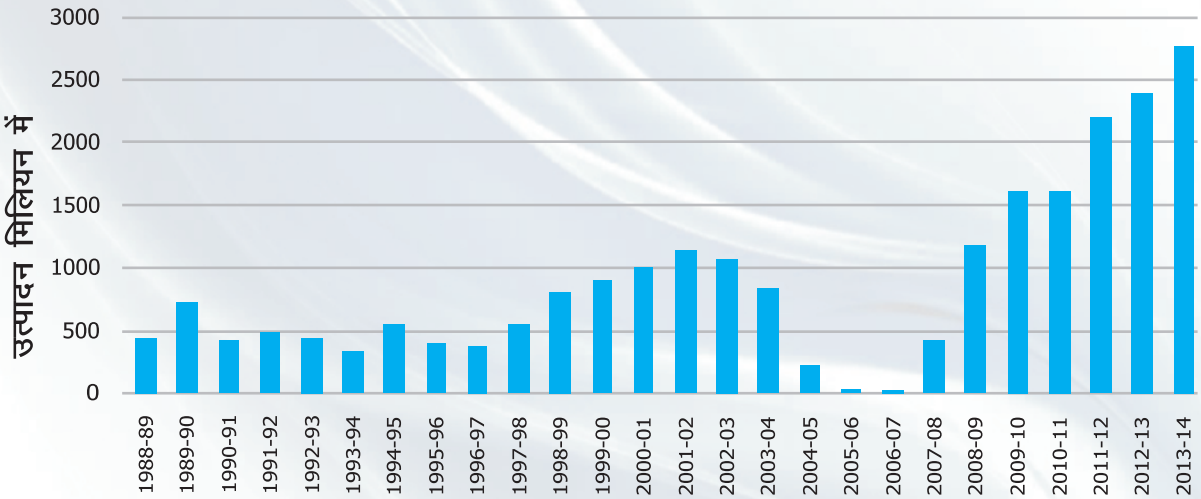

भारत सरकार टकसाल, नोएडा : प्रगति के 25 वर्ष

उत्पादन वृद्धि की जो गति अब पकड़ी है वह थमने का नाम नहीं ले रही है। इस वर्ष का उत्पादन लक्ष्य 3210 मिलियन पीसीस के निकट भी रुकने वाला नहीं है। कालांतर में सिक्का मुद्रण की और भी नई मशीनें स्थापित की जानी हैं तथा अन्य मशीनों एवं भवन का भी आधुनिकीकरण किया जा रहा है। भविष्य के सुंदर शहर नोएडा में स्थित इस टकसाल की कथा भी परी-कथा से कम नहीं है।

कैलाश चंद शर्मा
अध्यक्ष
नोएडा मिंट श्रमिक संघ

अनमोल वचन

यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आपने कितना दिया है,
बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि देते समय आपने कितने प्रेम से दिया।

नम्रता और स्नेहार्द्र वाणी, बस ये ही मनुष्य के आभूषण हैं। - तिरुवल्लुवर

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में स्थापना वर्ष (1988-89) से वर्ष (2013-14) तक वर्षवार सिक्कों के उत्पादन आंकड़े (मिलियन नग में)

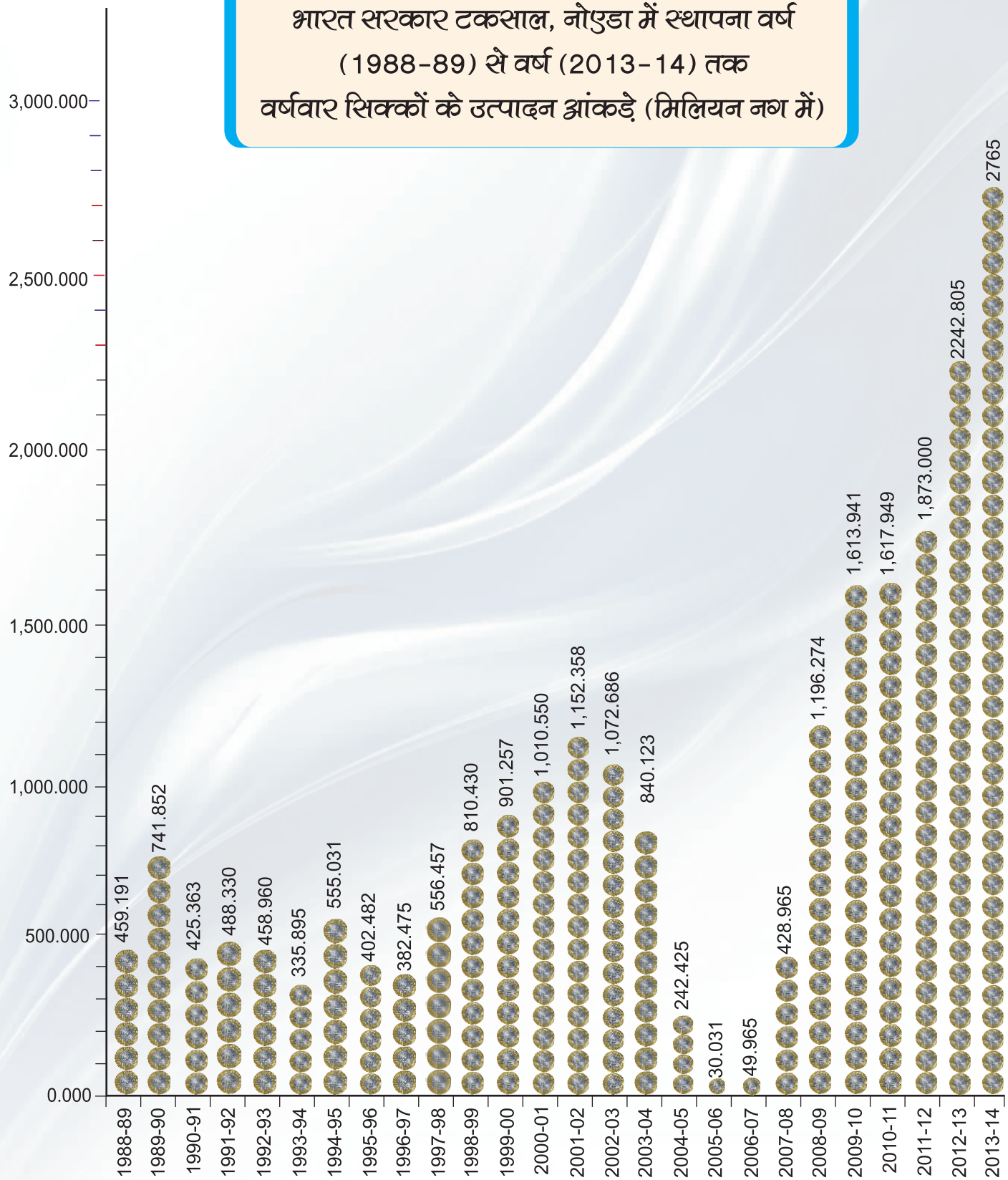

मां ही पृथ्वी पर ऐसी भगवती है जिसके कोई नास्तिक नहीं। -ई. लेगोव

करगिल शहीदों को अर्पित

अर्पित है श्रद्धांजलि, भारत के शहीद जवानों को।
भुला कभी न पाएंगे, हम उनके बलिदानों को।।

देश हित में प्राण गवांये, भारत के वीर सपूतों ने,
करा लिया शत्रु से खाली, भारतीय ठिकानों को,
अर्पित है श्रद्धांजलि, भारत के शहीद जवानों को।

दुश्मन को न पीठ दिखाई, तुमने रणभूमि पर,
भगा दिया सीमा के पार, तुमने बेईमानों को,
अर्पित है श्रद्धांजलि, भारत के शहीद जवानों को।

याद रखेंगे हम सदा, वीरों की कुरबानी को,
चुका कभी न पाएंगे, हम उनके एहसानों को,
अर्पित है श्रद्धांजलि, भारत के शहीद जवानों को।

मरकर भी वो अमर रहेंगे, भारत के इतिहास में,
जिन्होंने इस वतन की खातिर, त्यागे नित अरमानों को,
अर्पित है श्रद्धांजलि, भारत के शहीद जवानों को।

धन्य-धन्य मेरे देश की पावन वसुंधरा,
कोख से जनमे तुमने जांबाज लड़ाकू जवानों को,
अर्पित है श्रद्धांजलि, भारत के शहीद जवानों को।

राम गोपाल
कनिष्ठ तकनीशियन

नारी

जाने कितने बरस बीत गए
जाने कितनी ही सदियां,
आज भी दिखते हैं मुझे
कितने जख्मों के निशां,
जब से याद है तब से देखा है हमने
सिर्फ दर्द सहा और किया है सामना,
क्या है ये गलती हमारी कि हम बोलते नहीं
या है गलती कि कभी मुंह खोलते नहीं,
क्यों हक नहीं है जीने का बता दो हमें
कब तक सहना है और क्यों
आखिर इतना तो समझा दो हमें,
आखिर करें क्या ऐसा कि हमें सहना ना पड़े,
आखिर करें क्या ऐसा कि हमें चुप रहना ना पड़े
बस चाहत है इतनी कि हम सब मिलकर चलें
बस चाहत है इतनी हम सब खुलकर जिएं।
बस चाहत है इतनी कि मिटा दें दिलों से भेदभाव
और हर इंसान को हो जाए इंसानियत से लगाव।

बंदना मोहन
अधिकारी (वित्त एवं लेखा)

संत की सीख

एक धनी सेठ ने एक संत के पास आकर उनसे प्रार्थना की, ''महाराज, मैं आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए साधना करता हूं पर मेरा मन एकाग्र ही नहीं हो पाता है। आप मुझे मन को एकाग्र करने का कोई मंत्र बताएं।'' सेठ की बात सुनकर संत बोले, ''मैं कल तुम्हारे घर आऊंगा और तुम्हें एकाग्रता का मंत्र प्रदान करूंगा।'' यह सुनकर सेठ बहुत खुश हुआ। उसने इसे अपना सौभाग्य समझा कि इतने बड़े संत उसके घर पधारेंगे।

उसने अपनी हवेली की सफाई करवाई और संत के लिए स्वादिष्ट पकवान तैयार करवाए। नियत समय पर संत उसकी हवेली पर पधारे। सेठ ने उनका खूब स्वागत-सत्कार किया। सेठ की पत्नी ने मेवों व शुद्ध घी का स्वादिष्ट हलवा तैयार किया था। चांदी के बर्तन में हलवा सजाकर संत को दिया गया तो संत ने फौरन अपना कमंडल आगे कर दिया और बोले, ''यह हलवा इस कमंडल में डाल दो।'' सेठ ने देखा कि कमंडल में पहले ही कूड़ा-करकट भरा हुआ है। वह दुविधा में पड़ गया। उसने संकोच के साथ कहा, ''महाराज, यह हलवा मैं इसमें कैसे डाल सकता हूं। कमंडल में तो यह सब भरा हुआ है। इसमें हलवा डालने पर भला वह खाने योग्य कहां रह जाएगा, वह भी इस कूड़े-करकट के साथ मिलकर दूषित हो जाएगा।''

यह सुनकर संत मुस्कुराते हुए बोले, ''वत्स, तुम ठीक कहते हो। जिस तरह कमंडल में कूड़ा-करकट भरा है, उसी तरह तुम्हारे दिमाग में भी बहुत-सी ऐसी चीजें भरी हैं जो आत्मज्ञान के मार्ग में बाधक हैं। सबसे पहले पात्रता विकसित करो तभी आत्मज्ञान के योग्य बन पाओगे। यदि मन-मस्तिष्क में विकार तथा कुसंस्कार भरे रहेंगे तो एकाग्रता कहां से आएगी। एकाग्रता भी तभी आती है जब व्यक्ति शुद्धता से कार्य करने का संकल्प करता है।'' संत की बातें सुनकर सेठ ने उसी समय संकल्प लिया कि वह बेमतलब की बातों को मन-मस्तिष्क से निकाल बाहर करेगा।

प्रवीण गुप्ता
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

'कीमत पानी की नहीं, प्यास की होती है, कीमत मौत की नहीं, साँस की होती है,
प्यार तो बहुत करते हैं दुनियाँ में पर, कीमत प्यार की नहीं विश्वास की होती है।''

किसी मकसद के लिये खड़े हो तो एक पेड़ की तरह, गिरो तो बीज की तरह,
ताकि दुबारा उगकर उसी मकसद के लिए जंग कर सको।
स्वामी विवेकानन्द

अग्नि स्वर्ण को परखती है, संकट वीर पुरूषों को। -अज्ञात

संस्मरण

यादें : जीवन के झरोखों से

ज़िंदगी के रंग बड़े ही निराले होते हैं। ये कभी दिल में खुशी देते हैं तो कभी आत्मा को गम से भर देते हैं। कभी होठों पर हंसी लाते हैं तो कभी आंखे नम कर जाते हैं। ज़िंदगी के इन्हीं रंगों में मिलना और बिछुड़ना नदी के उन दो किनारों के समान होते हैं जो सदा एक साथ होते हुए भी अलग-अलग ही रहते हैं। मिलन में छिपी होती है आने वाले समय की सुखद उम्मीदें और जुदाई में अतीत की खट्टी-मीठी स्मृतियां, जो जुदाई के वक्त चलचित्र की भांति मानसपटल पर चित्रित होने लगती हैं। जुदाई से मेरी पहली मुलाक़ात तब हुई थी जब मैं अठारह वर्ष की आयु में घर छोड़कर तकनीकी शिक्षा के लिए रुड़की गया था और दूसरी बार जब दिसंबर, 2012 में होशंगाबाद छोड़कर भारत सरकार टकसाल, नोएडा आया था। 5 दिसंबर का दिन था। मेरे नोएडा प्रस्थान की तैयारियां चल रही थी। अभी तीन घंटे का समय शेष था। होशंगाबाद से जुदाई के समय 30 वर्ष लंबे अतीत की यादें रह-रह कर मन को विचलित किए जा रही थी। घर के एक कमरे में बैठकर यादों के खूबसूरत आईने में गुजरे वक्त की तस्वीरों को मन ही मन निहार रहा था। परिचितों, सहकर्मियों, साथियों और शुभचिंतकों की शुभकामनाएं उनके साथ बिताए क्षणों को तरोताजा कर रही थी।

मोबाइल की एस.एम.एस. टोन ने एक और संदेश के आने की सूचना दी। यादों के काफिले को थोड़ा विराम देकर मैंने मोबाइल के इनबॉक्स पर नज़र डाली। यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि यह एस.एम.एस. श्रीमान बसंत कुमार जी पाठक, भूतपूर्व महाप्रबंधक, प्रतिभूति कागज कारखाना, होशंगाबाद (जो कि सितंबर, 2009 में सेवानिवृत्त हुए थे) ने भेजा है। उत्सुकतावश संदेश को पढ़ने लगा...यह क्या...?

यह संदेश तो उन यादों को जगा रहा है जिन्हें मैंने पिछले 20 वर्ष कभी भूल कर भी याद करने की इच्छा नहीं की, हमेशा भूल जाने का प्रयास किया है परंतु आज रोक नहीं पा रहा हूं क्योंकि आज स्मृतियों के जागरण का दिन है। आज तो यादें उफनती नदी के उस सैलाब के समान उमड़ रही है जिसे किनारों का बंधन स्वीकार नहीं है। मैं सोचते-सोचते नदी के उस सैलाब में धीरे-धीरे डूबने लगता हूं और पहुंच जाता हूं बहुत दूर...अतीत की उन यादों में जहां से मैंने होशंगाबाद का सफर शुरू किया था।

नवंबर, 1982 में 22 साल की आयु में घर से हजार कि.मी. दूर प्रतिभूति कागज कारख़ाना, होशंगाबाद में पहली नौकरी बहुत दूर होने के कारण मुश्किल लग रही थी। उन दिनों यातायात और संचार के साधन भी वर्तमान जैसे उन्नत न थे। पत्र ही एकमात्र संचार का सुलभ साधन होता था। मैं अब पिता बनने के बाद महसूस कर सकता हूं कि मेरे मां-बाप ने वह समय कैसे गुजारा होगा जो मेरे उस पहले पत्र के पहुंचने में लगा था जो यह सूचना लेकर गया था कि उनका बेटा अपने गंतव्य पर सही सलामत पहुंच गया। खैर, शनैः शनैः बढ़ते पत्राचार के सिलसिले और पहली नौकरी की खुशी परिवारजनों से बिछुड़ने के गम को धीरे-धीरे हल्का करती गई थी। भागमभाग भरी जीवन शैली से अंजान होशंगाबाद की सादगी और सहजता ने कब मुझे अपना बना लिया पता ही नहीं चला। विंध्याचल की विनम्रता जैसे वहां के लोगों के स्वभाव, सतपुड़ा के सौंदर्य जैसा वहां के लोगों के व्यवहार और पतित पावनी नर्मदा

सेठानी घाट, होशंगाबाद

की शांत लहरों जैसी मिलनसारिता में समय पंख लगा कर उड़ने लगा था।

शीघ्र ही सरकारी मकान मिल जाने से ठहरने की तो उत्तम व्यवस्था हो गई थी परंतु खान-पान का अभी भी कोई निश्चित ठिकाना नहीं था क्योंकि अभी तक शादी होने की प्रतीक्षा थी। रिश्ता तो लगभग तभी तय हो चुका था जब मैं रुड़की में पढ़ाई की अंतिम औपचारिकताएं पूरी कर रहा था। मां ने सुनीता को किसी रिश्तेदार के यहां शादी में देखा और जेब से कुछ शगुन निकालकर हाथ पर रख दिया और दोनों परिवारों की सहमति हो गई थी। परंतु मेरे होशंगाबाद आ जाने के बाद शादी का मामला थोड़ा ठंडा-सा होता गया। जैसे-जैसे समय गुजर रहा था ससुराल पक्ष की उदासीनता बढ़ती जा रही थी, वे शादी के लिए कोई पहल नहीं कर पा रहे थे। जब मेरे घर वालों ने थोड़ा दबाव बनाया तो उनकी उदासीनता का कारण जानकर मन में बड़ा ही विषाद उत्पन्न हुआ, दरअसल भावी ससुर अपनी बेटी को अपने पास से हजार कि.मी. दूर नहीं भेजना चाहते थे और दबी जबान में उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि जब तक लड़का कहीं आसपास नहीं आ जाता आगे कोई पहल होना मुश्किल होगा। सच्चाई तो यह है कि मेरे बुजुर्ग मां-बाप भी तो यही चाहते थे कि उनका बेटा कहीं आसपास ही आ जाए बस फर्क सिर्फ इतना था कि वे बेटे के अच्छे भविष्य के लिए दिल की बात जुबान पर नहीं लाए थे। खैर मैंने सभी की भावना का सम्मान करते हुए समर्पण कर दिया और नई नौकरी की तलाश में जुट गया। नौकरी दो जगह मिली भी मगर दुर्भाग्यवश ऑफर दोनों ही बार बंबई (मुंबई का तत्कालीन नाम) ज्वाइन करने के लिए मिला। इसी उठा-पटक में पांच साल गुजर गए। न हमें उत्तर भारत में नौकरी मिली और न ही एक से दो हो जाने की संभावना बनी।

वर्ष 1987 में नोएडा में भारत सरकार टकसाल की स्थापना हमारे लिए आशा की किरण बनकर आई। नोएडा मिंट में पदों की भर्ती के लिए वित्त मंत्रालय की सभी इकाइयों में विज्ञापन निकाला गया जिसको एकबारगी देखकर लगा ईश्वर ने हमारी प्रार्थना सुन ली है और यह विज्ञापन हमारी समस्याओं के निदान के लिए ही निकला है। स्वयं को उपयुक्त उम्मीदवार जानकर बिना किसी विलंब के उचित माध्यम से आवेदन कर दिया और भारत सरकार टकसाल, नोएडा में पदस्थ होने के सपनों में भविष्य के ताने-बाने बुनने लगा। ख्वाबों और ख्यालों में मेरा भारत सरकार टकसाल, नोएडा से ऐसा एकाकार हो गया कि मेरा मन यह स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि मेरी नियुक्ति वहां नहीं होगी। जल्दी ही मेरे भ्रम के टूटने का समय आ गया और ज़ोर का झटका बड़े ही ज़ोर से तब लगा जब कार्यालय से यह जानकारी दी गई कि तुम्हारे आवेदन को नोएडा के लिए अग्रेषित नहीं किया जाएगा क्योंकि तुम पहले ही उस वर्ष में आवेदनों का निश्चित कोटा खत्म कर चुके हो। मुझे जैसे किसी ने आसमान से जमीन पर पटक दिया हो और मेरे सारे सपने काँच के सामान की तरह चूर-चूर हो गए हों। मैंने आवेदन अग्रेषित करने के लिए बहुत मिन्नते की, अपनी समस्याओं की दुहाई दी, उम्मीदों के सभी दरवाजे खटखटाए, सिफ़ारिशें लगाई पर कोई लाभ नहीं हुआ, केवल निराशा से हाथ मलता ही रह गया।

खैर उस समय मेरी किस्मत तो कमजोर निकली परंतु श्री बसंत कुमार जी पाठक तत्कालीन उप मुख्य अभियंता (यांत्रिकी) की किस्मत ने उन्हें भारत सरकार टकसाल, नोएडा में सीनियर वर्क्स मैनेजर (एस.डब्ल्यू.एम.) के पद पर आसीन कर दिया और वे होशंगाबाद छोड़कर नोएडा आ गए थे और मैं वहीं का वहीं रह गया था, अपनी परेशानियों से जूझता हुआ। मेरी समस्या जस की तस थी और मैं बड़ा ही उदास था परंतु होशंगाबाद में मिल रहे स्नेह और अपनेपन ने मुझे कभी कमजोर नहीं होने दिया और मेरा सदैव परिस्थितियों से मुक़ाबला करने का हौसला बना रहा।

परंतु वक्त तो न जाने क्यूं मुझे हराना ही चाहता था। सितंबर, 1989 के आखिरी दिनों में एक पत्र से पता लगा कि पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है और उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया है। मैं तुरंत छुट्टी लेकर उनसे मिलने आ गया। बीमार बाप के चेहरे के भावों से महसूस हो रहा था कि उन्हें अपनी आखिरी औलाद की शादी की जिम्मेदारी पूरी न कर पाने का मलाल है। 4 अक्तूबर, 1989 को उन्होंने अंतिम सांसे लेते वक्त पास बैठे भावी ससुर से न जाने क्या

कहा होगा यह नहीं मालूम वरन् पिताजी के इंतकाल के ठीक 6 माह पूरे होने के अगले दिन 3 मई, 1990 को अपनी बेटी को नजदीक रखने की लालसा रखने वाले बाप ने उसे शादी के बंधन में बांध कर होशंगाबाद जाने के लिए मुक्त कर दिया था।

बुरा वक्त अब शायद गुजर चुका था, खुशियों के आने की आहट महसूस होने लगी थी। परंतु मैं अभी भी दिल्ली, आस-पास एवं उत्तर भारत में नौकरी के लिए आवेदन करता रहता था। मैंने 1990 में एनटीपीसी दादरी और यू. पी.एस.सी. में ग्रुप 'ए' के लिए लगभग एक साथ आवेदन किया था। एनटीपीसी दादरी में नवंबर, 1990 में चयन भी हो गया था और हमने खुशी-खुशी सबको पत्र लिख कर सूचित कर यह घोषणा कर दी थी कि हम शीघ्र ही आप सबके नजदीक दादरी में आने वाले हैं। परंतु किस्मत और वक्त दोनों को यह मंजूर नहीं था, इससे पहले की मैं दादरी ज्वाइन करता दूसरी बड़ी खबर यह मिल गई कि यू.पी.एस.सी. में ग्रुप 'ए' के पद अभियंता (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इन्स्ट्रूमेंटेशन) पर प्रतिभूति कागज कारखाना, होशंगाबाद के लिए मेरा चयन हो गया है। वक्त और किस्मत के नतीजों के समक्ष एक बार फिर सबको झुकना ही पड़ा और सबकी सहमति से एक बार फिर होशंगाबाद से विदा लेते-लेते बच गए।

सुपरवाइजर से सीधे ग्रुप 'ए' अधिकारी बन जाने के बाद अब जीवन की मृग-मरीचिका समाप्त हो चुकी थी। घर आंगन में खुशियां छाने लगी थी, खुशी के रूप में 1991 में बेटा और 1994 में बेटी परिवार का हिस्सा बन चुके थे। होशंगाबाद की आबोहवा ऐसी रास आई की हमें समय की गति का पता ही नहीं चला। बच्चों का शिक्षा के लिए घर छोड़कर बाहर जाने का वक्त आ पहुंचा और बेटा इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए गाजियाबाद आ गया। सभी परिवारजनों एवं रिश्तेदारों ने खुशी के साथ मुझे याद दिलाया कि चलो बाप न सही बेटा तो कम से कम हम लोगों के नजदीक आ गया है। देखते-देखते बेटे ने तीन साल पूरे कर लिए और बेटी भी इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए भोपाल चली गई। एक बार फिर हम दोनों अकेले रह गए, परंतु अब जीवन में नीरसता नहीं थी अपितु यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जीवन खुशहाली के साथ गुजर रहा था। घर के सामने सार्वजनिक इच्छापूर्ति दुर्गा-साईं मंदिर की चहल-पहल और आस-पड़ोस के बच्चों की धमाचौकड़ी से वातावरण हमेशा रौनक भरा रहता था।

परिवर्तन तो समय की नियति होती है और नियति एक बार फिर जीवन में हल-चल मचा देने वाला भारत सरकार टकसाल, नोएडा में प्रबंधक (तकनीकी) के पद के लिए नियुक्ति का पैगाम लेकर आई। अंततः होशंगाबाद से विदा लेने का वक्त आ ही गया। जब 5 दिसंबर, 2012 को कार्यालय से औपचारिक विदाई में लोगों ने बड़े ही बोझिल मन से अपनी शुभकामनाएं दी तो मन में उमड़ रही यादों की घटा अश्क बनकर आंखों के कोनों से लुढ़क कर बाहर आने लगी थी। जैसे ही अंगुली के पोर से उसे पोछने लगा, रसोई से आवाज आई, आ जाओ चाय तैयार है...

आवाज सुनकर मेरा ध्यान भंग हुआ और याद आया कि मैं तो पाठक जी का एस.एम.एस. पढ़ रहा था और इस एस. एम.एस. ने मुझे किस तरह से मेरे अतीत के पलों से मिलवा दिया। एक बार फिर एस.एम.एस. को पढ़ने को मन लालायित हुआ। मोबाइल के स्क्रीन को एक्टिव किया और बसंत कुमार पाठक जी के एस.एम.एस. को पढ़ने लगा जिसमें लिखा था:

''बहुत-बहुत बधाई व अनेक शुभकामनाएं, मुझे याद है तुम नोएडा 1987 में जाना चहते थे वह इच्छा भी पूरी हुई। बसंत''

पहले तो मन ही मन पाठक साहब की स्मरण शक्ति की प्रशंसा की कि 25 वर्ष पुरानी जिस घटना को मैंने कभी याद नहीं किया आपने उसे अपने मन में अक्षरशः सहेज कर रखा और आज मुझे स्मरण कराया कि मैं 1987 में नोएडा जाना चाहता था वह इच्छा भी पूरी हुई भले ही उसे पूरा होने में पच्चीस साल लग गए। शायद विधाता ने मेरे लिए नोएडा पहुंचने का वक्त अभी के लिए निश्चित किया था, यह सोचकर इस उक्ति पर मेरा और अधिक विश्वास बढ़ गया कि ''जीवन में वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा किसी को कभी कुछ नहीं मिलता''।

यशपाल सिंह
प्रबंधक (तकनीकी)

लघु कथा

कमाई की रोटी

गुरु नानक अपने शिष्यों के साथ धर्म-उपदेश देते घूमते रहते थे। वे भूखे-प्यासे एक बस्ती में पहुंचे। शिष्यों ने सवाल किया कि यहां हमें भोजन कौन देगा ? तभी एक दीन-हीन बढ़ई वहां आकर बोला, ''आप सब मेरे घर चलें।'' उसके घर में खाने को कुछ न था। उसने सोचा कि इन सबको

विश्राम करने दिया जाए। दिन भर मेहनत करके जो कमाऊंगा, उससे खाने-पीने का बंदोबस्त करके शाम को इनकी सेवा करूंगा। वह अपने मालिक के यहां काम करने चला गया। नानक और उनके शिष्य भूखे ही सो गए। बढ़ई का नाम था लालो और जिस धनाढ्य के यहां वह काम करता था, उसका नाम था भागो। धनाढ्य ने उस दिन नगर भोज किया था। सबको खाना खिलाते-खिलाते शाम हो गई। लालो बढ़ई अपनी मजदूरी लेकर घर गया। उसकी पत्नी रोटी बनाने लगी।

तभी भागो सेठ ने आवाज लगाई - ''मेरे नगर भोज के बाद नगर में कोई भूखा तो नहीं बचा है ?'' उसके नौकरों ने बताया कि लालो के घर कुछ साधू भूखे सो रहे हैं। सेठ ने बढ़ई के घर सोए नानक सहित सभी साधुओं को बुलवा लिया और भोजन करने का आग्रह करने लगा। नानक बोले, ''आपके नौकर लालो के यहां भी अब तक रोटियां बन गई हैं, उन्हें भी मंगवा लें।'' सेठ को यह नागवार गुजरा लेकिन उसने लालो बढ़ई के घर से रोटियां मंगवा ली, फिर नानक से पूछा, ''महाराज, मेरे खाने में ऐसी क्या कमी है, जो मेरे नौकर के घर से खाना मंगवाया है।'' नानक बोले, ''अभी बताता हूं।'' यह कहकर उन्होंने भागो सेठ की रोटी तोड़ी तो उसमें से खून बहने लगा। फिर लालो बढ़ई की रोटी तोड़ी तो उसमें से दूध की धार बह निकली। नानक ने सेठ से कहा, ''तेरी कमाई गरीबों के शोषण की है और लालो बढ़ई की कमाई मेहनत की है।

प्रमोद कुमार द्विवेदी
उच्च श्रेणी लिपिक

सबसे बड़ी दस बातें

सर्वोत्तम दिन	:	आज
सबसे उपयुक्त समय	:	अभी
सबसे बड़ी आवश्यकता	:	सामान्य ज्ञान
सबसे विश्वसनीय मित्र	:	अपना हाथ
सबसे बड़ा पाप	:	भय
सबसे बड़ी भूल	:	समय का अपव्यय
सबसे बड़ी बाधा	:	अधिक बोलना
सबसे बुरी भावना	:	ईर्ष्या
सबसे बड़ा दरिद्र	:	उत्साहहीन
सबसे बड़ा भाग्यशाली	:	कार्यरत

आलस, अज्ञान और अश्रद्धा - ये तीन 'महारिपु' हैं। -विनोबा भावे

अभिप्रेरण

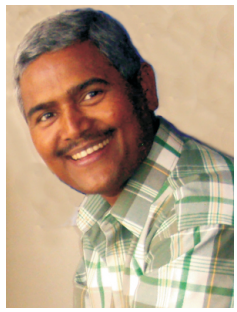

अभिप्रेरण शब्द का प्रादुर्भाव प्रेरण से हुआ है। प्रेरण वास्तव में जागृत अथवा सुषुप्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिशा निर्देश है। दूसरे शब्दों में ''अमुक व्यवहार'' क्यों ? का उत्तर है- प्रेरण। प्रेरण एवं प्रोत्साहन में अन्योन्याश्रय संबंध है। बिना प्रोत्साहन का प्रेरित होना कठिन है। अब प्रोत्साहन क्या है ?

प्रोत्साहन से तात्पर्य व्यक्ति की इच्छा, कार्य पूरा करने की तत्परता तथा कार्य करने की भावना जागृत करने से है। जिससे प्रोत्साहित होकर मनुष्य अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। प्रोत्साहन की उत्पत्ति प्रेरणा से हुई है। प्रेरणा को कई बार इच्छा, आवश्यकता, प्रेरक तत्व तथा अंतः प्रेरणा कहा जाता है। प्रायः व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा उसकी आर्थिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से मिलती है।

प्रबंधक सामान्यतः दो प्रकार की क्रियाएं करता है। संगठनात्मक तथा निर्देशात्मक। निर्देशात्मक प्रक्रिया के अंतर्गत श्रमिक वर्ग को कार्य के प्रति उत्साहित करना होता है। प्रबंधक के लिए आयोजन, संगठन तथा नियंत्रण संबंधी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण कार्य श्रमिकों को उत्साह एवं स्वेच्छा से कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। प्रेरित व्यक्ति किसी भी कार्य को पूर्ण करने में अधिक सफल होते हैं। प्रोत्साहन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

प्रोत्साहन से आशय ऐसी प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति को कार्य के प्रति सम्मान पैदा होता है। प्रेरित व्यक्ति निष्क्रियता एवं कार्य के प्रति उदासीनता को छोड़कर, अधिक कार्य करने के लिए सोचता है। प्रोत्साहन प्रक्रिया में समय, स्थान, परिस्थितियों तथा व्यवहार आदि सम्मिलित रूप से कार्य हेतु वातावरण तैयार करते हैं। कर्मचारियों को अनुकूल दशाओं में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरित करना ही प्रोत्साहन है। यह क्रियाएं निरंतर चलती रहती हैं। प्रोत्साहन से कर्मचारी प्रेरित होते हैं। अपने उद्देश्यों की पूर्ति करना प्रबंधक के लिए तभी संभव है जब वह कर्मचारियों को कार्य के लिए प्रेरित कर सके। पर्याप्त प्रोत्साहन के द्वारा ही प्रबंधक अपने अधीनस्थों से उचित सहयोग प्राप्त कर सकता है। कार्य संतुष्टि का कारण नहीं वरन् परिणाम है।

प्रोत्साहन एक मानसिक विचार है जिससे वर्तमान अथवा संभावी प्रलोभन के आधार पर व्यक्ति को कार्य के लिए प्रेरणा मिलती है चाहे वह आर्थिक है या अनार्थिक। प्रोत्साहन के माध्यम से उत्पादन लागत कम की जाती है, क्योंकि इससे श्रमिक की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। यदि इस अतिरिक्त उत्पादन का एक भाग श्रमिकों पर प्रोत्साहन के रूप में व्यय कर दिया जाए तो वह व्यय एक प्रकार से विनियोग का कार्य है।

प्रोत्साहन प्रेरणा से संबंधित परिणाम होते हैं तथा मानवीय व्यवहार को एक दिशा मिलती है। इस संबंध में दो विचार प्रचलित हैं- कुछ विचारकों का मत है कि भय बिनु होय न प्रीति अर्थात भय के बिना मनुष्य कार्य नहीं करता है। दूसरा विचार है कि धनात्मक प्रोत्साहन से कर्मचारी अधिक रूचि लेकर कार्य करते हैं।

प्रोत्साहन एवं मनोबल दोनों में अंतर है। प्रोत्साहन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कर्मचारी कार्य करने के लिए प्रेरित होता है, जबकि मनोबल स्वयं कार्य करने की इच्छा है जो प्रोत्साहन द्वारा अधिक प्रभावित होती है। प्रोत्साहन से कर्मचारी का मनोबल बढ़ता है और वह अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। मनोबल ऊंचा होने पर ही व्यक्ति अधिक निष्ठावान होता है।

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जिसकी आवश्यकताएं अनंत हैं। ये आवश्यकताएं ही मानव व्यवहार को निर्देशित एवं नियमित करती हैं। आवश्यकता ही मनुष्य को कार्य करने

के लिए प्रेरित करती है। आवश्यकता की संतुष्टि और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति विशेष व्यवहार करता है।

कर्मचारियों को प्रेरित करने की तकनीक : यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है की संतुष्ट इच्छाएं व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करती हैं, बल्कि असंतुष्ट इच्छा ही व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रतिष्ठान में कई प्रकार के कर्मचारी होते हैं, जिनकी बचत का स्तर भिन्न-भिन्न होता है। उदाहरण के लिए उच्च प्रबंधक वर्ग तो श्रमिक वर्ग की अपेक्षा अधिक संपन्न होते हैं, उनकी इच्छा का स्तर एवं आवश्यकताएं श्रमिक वर्ग से पूर्णतया भिन्न होती हैं। इसलिए कोई ऐसी प्रोत्साहन प्रणाली नहीं अपनाई जा सकती जो सभी वर्गों को समान रूप से प्रेरित करे। अतः प्रबंधन को चाहिए कि वह प्रत्येक वर्ग के लिए एक विशेष प्रकार की प्रोत्साहन प्रणाली को अपनाए।

रामाशीष प्रसाद
महासचिव
नोएडा मिंट श्रमिक संघ

विश्वास

कोई है जो मुझे बचाता है,
कोई है जो हर वक्त मेरे साथ रहता है,
कोई है जो मुझे हर वक्त देखता है,
कोई है जो हर गलती पर रोकता है।

कुछ ऐसा है जो मेरे आस-पास है,
कुछ ऐसा है जो सबसे खास है,
कुछ है जो करता है,
हर वक्त मेरे मन में वास।

वो मेरे रग-रग में बसा है,
और इस पूरे जग में बसा है,
बसा है मेरे रोम-रोम में वो,
बसा है हर ओ3म में वो।

जब कभी आया बुरा वक्त,
उसने ही मुझे संभाला,
हर घड़ी मुश्किलों से उसने
ही मुझे निकाला।

हर बार दिखाई उसने अपनी करामात,
बुराई पर अच्छाई की जीत हो,
हर बार दी यही सौगात।

वो कौन है जो हर बार मुझे है सिखाता,
जब भी मुसीबत आए वही है मुझे बचाता,
वो कौन है जो अलग-अलग रूप धर के,
है आ जाता।

ये है वो परमशक्ति जिसने बनाया ये संसार,
ये है वो विश्वास मेरे ईश्वर के प्रति,
जो हर वक्त हर घड़ी,
करता है मेरे हृदय में निवास।

बंदना मोहन
अधिकारी (वित्त एवं लेखा)

मुख पर प्रसन्नता व दिव्य तेज त्यागवृत्ति के बगैर प्राप्त नहीं होते। - स्वामी रामतीर्थ

शुभकामना संदेश

पंजीकरण संख्या : 7468 ।।श्रमेव जयते।। मो० : 9810355238, 9911207706

नोएडा मिंट श्रमिक संघ

Mail us : noidamintshramiksangh@gmail.com

रजत जयंती वर्ष 2014 के शुभागमन के साथ ही भारत सरकार टकसाल, नोएडा के द्वारा गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाना निश्चित ही हर्ष का विषय है। ऐसे प्रयास हमें राजभाषा हिन्दी के प्रति अपना स्नेह और सम्मान दर्शाने का सुअवसर प्रदान करते हैं। हमें विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होगी, लोगों के अंदर छुपी प्रतिभा को उनकी अपनी भाषा के माध्यम से बाहर लाएगी वहीं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों में दिन-प्रतिदिन के सरकारी काम-काज में हिन्दी के अधिकाधिक सरल, सहज और उत्साहवर्धक प्रयोग करने की प्रेरणा जगाएगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के साथ, संस्थान की प्रगति के लिए सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उत्पादन लक्ष्य के नित नवीन ऊंचाइयों की प्राप्ति के लिए अनेकों बधाइयां एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

कैलाश चंद शर्मा
अध्यक्ष

रामाशीष प्रसाद
महासचिव

कार्य समिति

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा अपने अन्य दायित्वों के साथ-साथ हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए भी सतत प्रयत्नशील है। इस श्रंखला में हिन्दी गृह पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। वास्तव में संविधान के अनुच्छेद 351 में जो मंशा निहित है उसे कार्य रूप देने में गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से जहां संस्थान का गौरव बढ़ता है वहीं इसके लेखकों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रकाशित भावपूर्ण लेखों/रचनाओं के माध्यम से नई जानकारियां मिलती है जो कि ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होती है।

पत्रिका का प्रकाशन सुचारू रूप से होता रहे इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

योगेन्द्र कुमार शर्मा
सचिव, कार्य समिति

सुहेल खान
उप सभापति, कार्य समिति

विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियाँ

स्थापना दिवस समारोह 2012 के अवसर पर
संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एम.एस. राणा

स्थापना दिवस समारोह 2012 के अवसर पर
पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, महाप्रबंधक

स्थापना दिवस समारोह 2014 के अवसर पर मंच पर आसीन
माननीय श्री नमोनारायण मीना, केंद्रीय राज्य वित्त मंत्री साथ में
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं निदेशक गण

स्थापना दिवस समारोह 2012 के अवसर पर
पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री एम.सी. बैलप्पा, महाप्रबंधक

स्थापना दिवस समारोह 2012 के अवसर पर
सी.एम.डी. कप के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एम.एस. राणा

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में हिंदी पखवाड़ा 2013 के अवसर पर
निबंध लेखन प्रतियोगिता का विहंगम दृश्य

नोएडा मिंट क्रिकेट टीम 2013

स्थापना दिवस 2014 के अवसर पर पुरस्कृत
सर्वश्रेष्ठ कर्मचारीगण : विहंगम दृश्य

गुलामों की अपेक्षा अत्याचार करने वालों की स्थिति अधिक खराब होती है। -महात्मा गाँधी

वसंत पंचमी : एक उल्लास

वसंत ऋतु आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। फूलों पर बहार आ जाती है, खेतों में सरसों सोने-सी चमकने लगती है, जौ और गेहूं की बालियां खिलने लगती हैं, आम के पेड़ों पर बौर आ जाता है और हर तरफ रंग-बिरंगी तितलियां मंडराने लगती हैं। मानव तो क्या पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते हैं। हर दिन नई उमंग से सूर्योदय होता है और नई चेतना प्रदान कर अगले दिन फिर आने का आश्वासन देकर चला जाता है। यूं तो माघ का यह पूरा मास ही उत्साह देने वाला है, पर वसंत पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) का पर्व भारतीय जनजीवन को अनेक तरह से प्रभावित करता है। प्राचीनकाल से इस उल्लास को ज्ञान और कला की देवी मां सरस्वती का जन्मदिवस माना जाता है। इस दिन शिक्षाविद् मां शारदे की पूजा कर उनसे और अधिक ज्ञानवान होने की प्रार्थना करते हैं। जो महत्व सैनिकों के लिए अपने शस्त्रों और विजयादशमी का है, जो विद्वानों के लिए अपनी पुस्तकों और व्यास पूर्णिमा का है, जो व्यापारियों के लिए अपने तराजू, बाट, बहीखातों और दीपावली का है, वही महत्व

कलाकारों के लिए वसंत पंचमी का है। चाहे वह कवि हो या लेखक, गायक हो या वादक, नाटककार हो या नृत्यकार, वे दिन का प्रारंभ अपने उपकरणों की पूजा और मां सरस्वती की वंदना कर ही करते हैं।

वसंत पंचमी की कथा के अनुसार, सृष्टि के प्रारंभिक काल में भगवान विष्णु की आज्ञा से ब्रह्मा ने जीवों, खासतौर पर मनुष्य योनि की रचना की। अपनी रचना से वे संतुष्ट नहीं थे। उन्हें लगता था कि कुछ कमी रह गई है, जिसके कारण चारों ओर मौन छाया रहता है। विष्णु से अनुमति लेकर ब्रह्मा ने अपने कमंडल से जल छिड़का और पृथ्वी पर जलकण बिखरते ही उसमें कंपन होने लगा। इसके बाद वृक्षों के बीच से एक अद्‌भुत शक्ति प्रकट हुई। यह प्राकट्य एक चतुर्भुजी मनोहर स्त्री का था, जिसके एक हाथ में वीणा और दूसरा हाथ वर-मुद्रा में था। अन्य हाथों में पुस्तक एवं माला थी। ब्रह्मा ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, संसार के समस्त जीव-जंतुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी। तब ब्रह्मा ने उस देवी को सरस्वती कहा। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। इन्हीं के द्वारा संगीत की उत्पत्ति हुई जिस कारणवश इन्हें संगीत की देवी भी कहा जाता है। वसंत पंचमी का दिन इनके जन्मोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। ऋग्वेद में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है -

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना॥
या ब्रह्माऽच्युत शंकर प्रभितिभिर्देवैः सदा वंदिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा॥

वसंत पंचमी का पर्व हमें अतीत की अनेक प्रेरक घटनाओं की भी याद दिलाता है। सर्वप्रथम यह हमें त्रेतायुग से जोड़ती है। रावण द्वारा सीता-हरण के पश्चात श्रीराम उनकी खोज में दक्षिण की ओर बढ़े। जिनमें से एक स्थान दंडकारण्य भी था, यहीं शबरी नामक भीलनी रहती थी। जब राम उसकी कुटिया में

पधारे, तो वह सुध-बुध खो बैठी और चख-चखकर मीठे बेर रामजी को खिलाने लगी। वसंत पंचमी के दिन ही रामचंद्र जी वहां आए थे। उस क्षेत्र के वनवासी आज भी एक शिला को पूजते हैं, जिसके बारे में उनकी श्रद्धा है कि श्रीराम आकर यहीं बैठे थे। वहां शबरी माता का मंदिर भी है।

इसी के साथ बसंत पंचमी का दिन हमें पृथ्वीराज चौहान की भी याद दिलाता है। उन्होंने विदेशी हमलावर मौहम्मद गौरी को 16 बार पराजित किया और उदारता दिखाते हुए हर बार जीवित छोड़ दिया, पर जब सत्रहवीं बार वे पराजित हुए तब मौहम्मद गौरी ने उन्हें नहीं छोड़ा और उन्हें अपने साथ अफगानिस्तान ले गया। इसके बाद की घटना तो जगप्रसिद्ध है। गौरी ने मृत्युदंड देने से पूर्व उनके शब्दभेदी बाण का कमाल देखना चाहा। पृथ्वीराज के साथी कवि चंदबरदाई के परामर्श पर गौरी ने ऊंचे स्थान पर बैठकर तवे पर चोट मारकर संकेत किया। तभी चंदबरदाई ने पृथ्वीराज को संदेश दिया :

चार बांस चौबीस गज,
अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है,
मत चूको चौहान ।।

पृथ्वीराज चौहान ने इस बार भूल नहीं की। उन्होंने तवे पर हुई चोट और चंदबरदाई के संकेत से अनुमान लगाकर जो बाण मारा, वह गौरी के सीने में जा धंसा। इसके बाद चंदबरदाई और पृथ्वीराज ने भी एक-दूसरे के पेट में छुरा भौंककर आत्मबलिदान दे दिया। यह घटना भी 1192 ई. में वसंत पंचमी वाले दिन ही हुई थी।

रजनी कुमारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बाल श्रम

बालपन की किलकारी भूख के ताप से हुई मूक,
पोथी छोड़ कुदाल खोदते हाथ का भार अचूक।
कीचड़, धूप, आंधी में श्रम करना हुआ मजबूरी,
गरीबी की पराकाष्ठा ! पेट और पीठ की घटती दूरी।।

कुछ धनहीनता और कुछ माता-पिता की मूर्खता,
किंतु सबसे ज्यादा स्वार्थी समाज की संवेदनहीनता।
जिसने बालक को श्रमिक बनने को बाध्य किया,
लेखनी को छीन कोमल हाथों में छड़ी पकड़ाया।।

गाय-बकरी की सेवा में करता बाल्यजीवन कुरूप,
अपने भविष्य को दरिद्र करता अज्ञान और अबूझ।
विद्योपार्जन की किसको फुर्सत ? स्थिति तो ऐसी हुई,
दो दाना अन्न के लिए बालपन चोर बनने को आतुर हुआ।।

गोविन्द कुमार
कनिष्ठ तकनीशियन

बोध कथा

सफलता का मार्ग

एक बार एक गांव का मुखिया महात्मा बुद्ध के पास आया और पूछने लगा, '' क्या बुद्ध सभी जीवों के प्रति करुणा भाव रखते हैं ?'' बुद्ध ने कहा, ''हां''।

मुखिया ने पूछा, ''क्या बुद्ध अपनी संपूर्ण शिक्षा कुछ ही लोगों को देते हैं ?''

उसे तरीके से समझाने के लिए महात्मा बुद्ध ने कहा, ''मान लो, एक किसान के पास तीन अलग-अलग खेत हैं। एक खेत की मिट्टी बहुत उपजाऊ है, दूसरे की मिट्टी सामान्य है। तीसरे की मिट्टी में ज्यादा कुछ नहीं उग सकता। अब किसान खेत में बीज बोना चाहता है। तुम्हारे ख्याल से कौन से खेत में वह उन्हें बोएगा ?''

मुखिया ने उत्तर दिया, ''वह सबसे पहले उन्हें उपजाऊ मिट्टी में बोएगा, उस खेत को भर लेने के बाद वह उस खेत में बीज डालना शुरू करेगा जिसकी मिट्टी सामान्य है। जो खेत बंजर है, हो सकता है उसमें वह बीज बोए ही नहीं। बीज बेकार करने से भला क्या फायदा ?''

बुद्ध ने मुखिया को समझाया, ''आध्यात्मिक शिक्षा के साथ भी ऐसा ही है। जो मठवासी शिष्य सच की तलाश में हैं, वे उपजाऊ जमीन जैसे हैं। उनको संपूर्ण शिक्षा दी जाती है। वे सभी साधनाओं को और जागृति के मार्ग को पूर्ण रूप से सीख लेते हैं। जो शिष्य मेरे पास दिव्य ज्योति के लिए आते हैं, मैं उन्हें पूरी शिक्षा देता हूं, क्योंकि वे ऐसा ही चाहते हैं। आम लोग सामान्य जमीन जैसे होते हैं। वे भी शिष्य हैं पर वे मठवासियों के जैसे अपनी पूरी जिंदगी शिक्षा के लिए समर्पित नहीं करना चाहते। उनके लिए दूसरे और कई काम ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं, पर आम लोगों को भी मैं पूरी आध्यात्मिक शिक्षा देता हूं।''

इस पर मुखिया हैरान हुआ और बोला, ''फिर आप उन लोगों को शिक्षा क्यों देते हैं, जो सुनने के लिए तैयार नहीं हैं ?'' बुद्ध ने इसका उत्तर दिया, ''अगर किसी एक दिन वे शिक्षा का एक भी वाक्य समझ लेंगें और उसे दिल में उतार लेंगें, तो उससे उन्हें लंबे समय तक खुशी और आशीष मिलेंगें।''

मुखिया समझ गया कि भगवान बुद्ध पूरी दुनिया को शिक्षा देने के लिए आए हैं। सभी उसके लिए तैयार हैं या नहीं, यह उन्होंने नहीं सोचा। वह मानकर चल रहे थे कि एक दिन सब तैयार हो जाएंगे।

बातें करते-करते काफी रात हो गयी तो भगवान बुद्ध ने प्रत्यक्ष उदाहरण के माध्यम से मुखिया को अपने अंतिम वचन, ''अप्प दीपो भवः'' अर्थात 'अपने दीपक स्वयं बनो' का ज्ञान कराया।

जब मुखिया जाने के लिए सीढ़ियों से उतरने को हुआ तो सीढ़ियों पर अंधकार देखकर घबरा गया। मुखिया बुद्ध से बोला, ''गुरुजी, अंधेरे के कारण रास्ता नहीं सूझ रहा है, ऐसे में मैं सीढ़ियां कैसे उतरूंगा ?'' मुखिया की बात सुनकर बुद्ध ने एक दीपक जलाकर मुखिया के हाथ में रख दिया। मुखिया दीपक लेकर जैसे ही पहली सीढ़ी उतरा, वैसे ही बुद्ध ने दीपक बुझा दिया। दीपक बुझते ही फिर चारों ओर अंधकार फैल गया। यह देखकर

मुखिया हैरानी से बोला, ''यह आपने क्या किया? अचानक दीपक क्यों बुझा दिया? मैं तो पहली सीढ़ी पर अटका हुआ हूं। अब मैं बाकी सीढ़ियां कैसे पार करूंगा?'' मुखिया की बात पर बुद्ध बोले, ''जब एक सीढ़ी पर पांव रख ही दिया है तो आगे भी सीढ़ियां मिलती जाएंगी। किसी दूसरे के द्वारा दिए गए दीपक के सहारे जो प्रकाश मिलता है, वह असली प्रकाश नहीं होता। असली प्रकाश वह होता है जो अंधकार में चलने पर तुम्हारे अंदर स्वयं विकसित होता है। वह दीपक के प्रकाश से कहीं बेहतर व एक नवीन प्रकाश होता है, जो आपको केवल मार्ग ही नहीं दिखाता अपितु आपके अंतर्मन के सारे चक्षुओं को खोलकर एक नई दिशा देता है। जो व्यक्ति अपना प्रकाश स्वयं निर्मित करना सीख जाता है, वह अपना जीवन सर्वश्रेष्ठ बना लेता है। इसलिए मैंने यह दीपक बुझा दिया क्योंकि इसके सहारे तुम सीढ़ियां तो आसानी से पार कर लोगे, किंतु अंतर्मन की सीढ़ियों को पार नहीं कर पाओगे।''

शशि भूषण
वरिष्ठ संचालक

गूँज

गूंजी वो आवाज़ फिर, डरी-डरी सहमी-सी।
फिर किसी चौराहे पर, किसी गली के नुक्कड़ पर,
खामोशी भरी रात में, एक दर्द की गुहार वो।
रौंद दिया था फिर किसी, मासूम की आवाज़ को,
तार-तार कर डाला उसने, एक लड़की के संसार को,
अपनी हवस की आड़ में, जला दिया मासूम को।
वो देता रहा जख्म उसको, इंसानियत की आड़ में,
फिर ले नकाब मासूमियत का, छिप गया उस भीड़ में।
हर रात डरी कुछ सहमी वो, सोच कर ये वाकिया,
पर चुप रही ये सोच कर कि, क्या किसी ने कर लिया,
पर आज जब आवाज़ ये, फिर गूंजी किसी रात में,
फिर क्यों चुप रहकर जलती वो, इस बदले की आग में।
बन गई फौलाद फिर, एक देश की आवाज वो,
चाहती है अब गूंजना, हर वहशियों के कान तक,
जो फिर उठे ना नजर किसी भी नारी के सम्मान पर।
आज लड़ी वो लाठी से, पानी में भी भीग कर,
पर नहीं रुकी वो जनपथ पर, खाकी वर्दी के जोर पर।

योगेन्द्र कुमार शर्मा
संचालक

आशा ही वह मधुमक्खी है, जो बिना फूलों के शहद बनाती है। -इंगर सोल

करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में हर कोई सबसे आगे जाना चाहता है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि हर कोई जीतना चाहता है। जीत का जज़्बा किसी भी देश के विकास का सूचक है, परंतु इस बात पर गौर करना ज्यादा जरूरी है कि हमने सफलता की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए ईमानदारी से कितनी कोशिश की है। जिंदगी की प्रत्येक दौड़ में कभी किसी को विजय मिलती है तो कभी किसी को पराजय

का सामना करना पड़ता है। लेकिन यदि हम अपना मस्तिष्क खुला रखें तो हर अनुभव हमें समृद्ध बनाता है। सही अभ्यास के साथ जब हम अपनी बंधी-बंधाई योग्यता से ऊपर उठकर कुछ करने की कोशिश करते हैं, तो ज्ञान और हौसला दोनों ही बढ़ते हैं।

बचपन में हम सभी को कई नैतिक व मनोबल बढ़ाने वाली कहानियां सुनाई जाती थी, जो आज भी शुरूआती कक्षाओं मे पढ़ाई जाती हैं। बचपन में शायद उन कहानियों का आशय समझ में न आता हो किंतु समय के साथ जिसने भी उन कहानियों का गूढ़ अर्थ समझ लिया, उसने सफलता की इबारत लिख दी है। ऐसी ही एक कहानी थी; खरगोश और कछुए की कहानी, जिसे लगभग हम सभी ने पढ़ी होगी जिसमें खरगोश की हार से यह भी सबक मिलता है कि जब तक लक्ष्य हासिल न हो जाए तब तक आराम या आलस के वशीभूत नहीं होना चाहिए।

खरगोश और कछुआ तो प्रतीक मात्र हैं। यदि हम अपने आस-पास नजर दौड़ाएं तो हम पाएंगे कि लोगों की कार्य-पद्धति भी इन्हीं दो श्रेणियों मे बंटी है। कोई निरंतर अभ्यास से अपनी कार्य-कुशलता को निखारता है और लक्ष्य के लिए जुनून की हद तक कोशिश करता है तो कोई अतिआत्मविश्वास की वजह से सक्षम होते हुए भी लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाता है। क्षेत्र कोई भी हो, नई-नई चीजों को सीखना, नई परिस्थितीयों में खुद को ढालना सफलता का प्रमुख सबक है। अभ्यास के दौरान कभी-कभी नकारात्मक भाव आना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है किंतु उसे स्वयं पर हावी होने देना सफलता की सबसे बड़ी बाधा है। आशावादी दृष्टिकोण को सदैव अपनी सांसों की गति के साथ रखना चाहिए। प्रेमचंद ने कहा था कि, ''चित्त से दृढ़ हो जाने वाला व्यक्ति चूने के फर्श के समान हो जाता है, जिसको बाधाओं के थपेड़े और भी मजबूत कर देते हैं।'' अभ्यास एक ऐसा गुण है जो उपलब्धियों एवं सफलताओं का रास्ता प्रशस्त करता है। जीवन में नित नई बातों को सीखना तथा उसका अभ्यास करते रहना जीवन की सतत प्रक्रिया है। कोई भी व्यक्ति सर्वगुण संपन्न नहीं होता और न ही ज्ञान का भंडार लेकर पैदा होता है। हर कोई निरंतर अभ्यास से अपनी कार्य-कुशलता और ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करता है। इसीलिए तो कहा गया है कि:

करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान,
रसरी आवत जात ते, सिल पर पड़त निशान।

अर्थात जब रस्सी को बार-बार पत्थर पर रगड़ने से पत्थर पर निशान पड़ सकता है तो निरंतर अभ्यास से मूर्ख

व्यक्ति भी बुद्धिमान बन सकता है।

निरंतर प्रयत्नशीलता और आलस्य का त्याग सफलता की कुंजी है। चारों तरफ फैले ज्ञान के खजाने को स्वयं में समेटने के लिए कुछ नया जानने की इच्छा और अभ्यास की प्रक्रिया को कभी थमने नहीं देना चाहिए। अपनी योग्यता पर विश्वास भी करना चाहिए किंतु अतिविश्वास से भी दूर रहना चाहिए वरना खरगोश जैसी स्थिति बनते देर नहीं लगती। निरंतर प्रयत्न से अभ्यास का सकारात्मक फल मिलता है और कछुए की तरह कच्छप अवतार धारण कर संपूर्ण विश्व का भार उठाकर विश्व विजयी बन सकते हैं। जो लोग ताउम्र सीखते हैं वे ही बुलंदियों पर पहुंचते हैं और ''प्रैक्टिस मेक्स परफेक्ट'' जैसी कहावतों को चरितार्थ करते हैं।

गोरखनाथ यादव
प्रबंधक (तकनीकी)

भ्रष्टाचार

एक सरकारी कर्मचारी ने जनता से रिश्वत मांगी,
जनता भ्रष्टाचार के खिलाफ चिल्लाई।

आवाज अधिकारी के कान तक आई।
अधिकारी ने सुना तो इतना डांटा,
इतना डांटा, इतना डांटा।
कि सारे दफ्तर में छा गया सन्नाटा।

अधिकारी ने कर्मचारी को अपने पास बुलाया।
कर्मचारी रोता हुआ गया, हंसता हुआ बाहर आया।।

सहयोगियों ने पूछा क्या हुआ भाई।
नौकरी पर तो आंच नहीं आई।।

कर्मचारी बोला, साहब कहते हैं कि :
कार्यालय की परंपरा मत तोड़ो।
भ्रष्टाचार से नाता तोड़ो।।

अपना चरित्र ऐसा बनाओ कि,
रिश्वत बिन मांगे मिल जाए।।

करन सिंह जाटव
कनिष्ठ तकनीशियन

जब हम कोई काम करने की इच्छा करते हैं तो शक्ति आप ही आ जाती है। -प्रेमचंद

विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियाँ

टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2012 का खेलकर उद्घाटन करते हुए
श्री एम.एस. राणा, सी.एम.डी. एवं श्री अश्विनी कुमार, निदेशक (तक.)

स्थापना दिवस 2013 : नासिक मंच का दृश्य

टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2012 का गुब्बारे उड़ाकर उद्घाटन करते हुए
श्री एम.एस. राणा, सी.एम.डी. एवं श्री अश्विनी कुमार, निदेशक (तक.)

मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच 2014 के दौरान मैदान में
श्री एम.सी. बैलप्पा, महाप्रबंधक

योग प्रशिक्षण, 2013 का दृश्य

'योग की ओर' पुस्तक का विमोचन करते हुए
श्री एस.पी. वर्मा, महाप्रबंधक

नोएडा मिंट फुटबाल टीम 2010

टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2012 का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए
श्री एम.एस. राणा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

उत्तराखंड : इतिहास एवं परिचय

उत्तराखंड का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव जाति का। यहां कई शिलालेख, ताम्रपत्र व प्राचीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जिससे गढ़वाल की प्राचीनता का पता चलता है। इस भूमि का प्राचीन ग्रंथों में देवभूमि या स्वर्गद्वार के रूप में वर्णन किया गया है। पवित्र गंगा नदी हरिद्वार में मैदान को छूती है। प्राचीन धर्मग्रंथों में वर्णित यही मायापुर है। गंगा यहां भौतिक जगत में उतरती है। इससे पहले वह सुर-नदी देवभूमि में विचरण करती है। मां गंगा का उद्गम क्षेत्र उस देव संस्कृति का वास्तविक क्रीड़ा क्षेत्र रहा है जो पौराणिक आख्यानों के रूप में आज भी धर्म-परायण जनता के मानस में विश्वास एवं आस्था के रूप में जीवित हैं।

गढ़वाल का सातवीं सदी का ऐतिहासिक विवरण प्राप्त है। सन् 688 ई. के आसपास चांदपुर गढ़ी (वर्तमान चमोली जिले में कर्णप्रयाग से 13 मील पूर्व) में राजा भानुप्रताप का राज्य था। उसकी दो कन्याएं थीं। प्रथम कन्या का विवाह कुमाऊं के राजकुमार राजपाल से हुआ तथा छोटी कन्या का विवाह धारा नगरी के राजकुमार कनकपाल से हुआ इसी का वंश आगे बढ़ा। महाराजा कनकपाल ने सन् 756 ई. तक चांदपुर गढ़ी में राज किया। कनकपाल की 37वीं पीढ़ी में महाराजा अजयपाल का जन्म हुआ। इस लंबे अंतराल में कोई शक्तिशाली राजा नहीं हुआ। गढ़वाल छोटे-छोटे ठाकुरी गढ़ों में बंटा था, जो आपस में लड़ते रहते थे। कुमाऊं के कत्यूरी शासक भी आक्रमण करते रहते थे। कत्यूरियों ने ज्योतिषपुर (वर्तमान जोशीमठ) तक अधिकार कर लिया था। सन् 1500 ई. में महाराजा अजयपाल नाम के प्रतापी राजा हुए। इन्होंने 52 छोटे-छोटे ठाकुरी गढ़ों को जीतकर एक शक्तिशाली गढ़वाल राज्य की स्थापना की। गढ़वाल का अर्थ है, गढ़ अर्थात किला, वाल अर्थात किलों का समूह। कुमाऊं के राजा कीर्तिचंद व कत्यूरियों के आक्रमण से त्रस्त होकर महाराजा अजयपाल ने सन् 1508 ई. के आसपास अपनी राजधानी चांदपुर गढ़ी से देवलगढ़ तथा सन् 1512 ई. में देवलगढ़ से श्रीनगर में स्थापित की। इनके शासनकाल में गढ़वाल की सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक उन्नति हुई।

महाराजा अजयपाल की तीसरी पीढ़ी में बलभद्र हुए। ये दिल्ली के शहंशाह अकबर के समकालीन थे। कहते हैं कि एक बार नजीबाबाद के निकट शिकार खेलते समय बलभद्र ने शेर के आक्रमण से शहंशाह की रक्षा की। इसीलिए उन्हें शाह की उपाधि प्राप्त हुई, तब से सन् 1948 ई. तक गढ़वाल के राजाओं के साथ शाह की उपाधि जुड़ी रही।

सन् 1803 ई. में महाराजा प्रद्युम्न शाह संपूर्ण गढ़वाल के अंतिम नरेश थे जिनकी राजधानी श्रीनगर (गढ़वाल) थी। गोरखों के आक्रमण और संधि-प्रस्ताव के आधार पर प्रति वर्ष 25000/- रुपये कर के रूप में गोरखों को देने के कारण राज्य की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई थी। इसी अवसर का लाभ उठाकर गोरखों ने दूसरी बार आक्रमण किया और पूरे गढ़वाल को तहस-नहस कर डाला। राजा प्रद्युम्न शाह देहरादून के खुड़बड़ा के युद्ध में वीर-गति को प्राप्त हुए और गढ़वाल में गोरखों का शासन हो गया। महाराजा प्रद्युम्न की मृत्यु के बाद इनके 20 वर्षीय पुत्र सुदर्शन शाह इनके उत्तराधिकारी बने। सुदर्शन शाह ने

बड़े संघर्ष और ब्रिटिश शासन की सहायता से जनरल जिलेस्पी और जनरल फ्रेजर के युद्ध संचालन के बल पर गढ़वाल को गोरखों की अधीनता से मुक्त करवाया। इस सहायता के बदले अंग्रेजों ने अलकनंदा व मंदाकिनी के पूर्व दिशा का संपूर्ण भाग ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया, जिससे यह क्षेत्र ब्रिटिश गढ़वाल कहलाने लगा और पौढ़ी इसकी राजधानी बनी।

टिहरी गढ़वाल- महाराजा सुदर्शन शाह ने भागीरथी और भिलंगना के संगम पर अपनी राजधानी बसायी, जिसका नाम टिहरी रखा। राजा सुदर्शन शाह के पश्चात क्रमशः भवानी शाह (1859-72), प्रताप शाह (1872-87), कीर्ति शाह (1892-1913), नरेंद्र शाह (1916-46) टिहरी रियासत की राजगद्दी पर बैठे। महाराजा प्रताप शाह और कीर्ति शाह की मृत्यु के समय उत्तराधिकारियों के नाबालिग होने के कारण तत्कालीन राजमाताओं ने कमशः राजमाता गुलेरिया तथा राजमाता नैपालिया ने अंग्रेज रेजीडेंटों की देख-रेख में सन् 1887-92 तथा 1913-1916 तक शासन का भार संभाला। रियासत के अंतिम राजा मानवेंद्र शाह के समय सन् 1949 में रियासत भारतीय गणतंत्र में विलीन हो गई।

पौढ़ी गढ़वाल - यह कांडोलिया पर्वत के उत्तर तथा समुद्रतल से 5950 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां के मुख्य शहर कोटद्वार, पाबौ, पैठाणी, थैलीसैण, घुमाकोट, श्रीनगर, दुगड्डा, सतपुली इत्यादि हैं। ब्रिटिश शासनकाल में यह क्षेत्र राजस्व इकट्ठा करने का मुख्य केंद्र था।

भारत के सत्ताईसवें राज्य के रूप में 9 नवंबर, 2000 को उत्तरांचल (अब उत्तराखंड) नाम से इस प्रदेश का जन्म हुआ। इससे पहले यह उत्तर प्रदेश का ही एक हिस्सा था। यह पूर्व में नेपाल, उत्तर में चीन, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि धरातल पर यदि कहीं समाजवाद दिखाई देता है तो वह इस क्षेत्र में देखने को मिलता है, इसीलिए यहां की संस्कृति संसार की श्रेष्ठ संस्कृतियों में मानी जाती है। इस भूमि की पवित्रता एवं प्राकृतिक विशेषता के कारण यहां के निवासियों में भी इसका प्रभाव परिलक्षित होता है अर्थात् प्रकृति प्रदत्त शिक्षण द्वारा यहां के निवासी ईमानदार, सत्यवादी, शांत स्वभाव व निश्छल, कर्मशील एवं ईश्वर प्रेमी होते हैं।

उत्तराखंड को 13 जिलों में विभक्त किया गया है। गढ़वाल में 7 जिले अर्थात देहरादून, उत्तरकाशी, पौड़ी, टिहरी (अब नई टिहरी), चमोली, रुद्रप्रयाग और हरिद्वार और कुमाऊं में 6 जिले अल्मोड़ा, रानीखेत, पिथौरागढ़, चंपावत, बागेश्वर और ऊधमसिंह नगर आते हैं।

उत्तराखंड की प्रमुख नदियां- गंगा, यमुना, काली, रामगंगा, भागीरथी, अलकनंदा, कोसी, टौंस, मंदाकिनी, धौलीगंगा, गौरीगंगा, पिंडर नयार (पूर्व), पिंडर नयार (पश्चिम) आदि प्रमुख नदियां है।

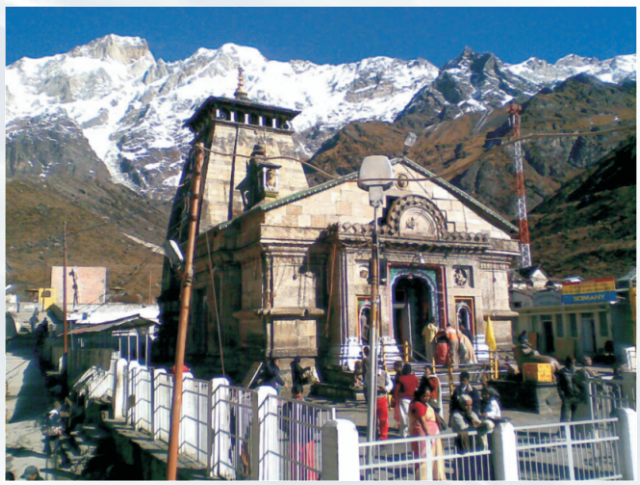

उत्तराखंड के प्रमुख हिमशिखर- गंगोत्री (6614), दूनगिरि (7066), बंदरपूछ (6315), केदारनाथ (6490), चौखंवा (7138), कामेल (7756), संतोपथ (7075), नीलकंठ (5696), नंदा देवी (7817), गोरी पर्वत (6250), हाथी पर्वत (6227), नंदा धुंटी (6309), नंदा कोट (6861), देव वन (6853), माना (7273), मृगथनी (6855), पंचाचूली (6905), गुनी (6179), यूंगटागट (6945) हैं।

उत्तराखंड के प्रमुख ग्लेशियर- 1. गंगोत्री 2. यमुनोत्री

3. पिंडर 4. खतलिंग 5. मिलम 6. जौलिंकांग 7. सुंदर ढूंगा इत्यादि हैं।

उत्तराखंड की प्रमुख झीलें (ताल)- गौरीकुंड, रूपकुंड, नंदीकुंड, ड्योढ़ी ताल, जराल ताल, शहस्त्रा ताल, मासर ताल, नैनीताल, भीमताल, सात ताल, नौकुचिया ताल, सूखा ताल, श्यामला ताल, सुरपा ताल, गरूड़ी ताल, हरीश ताल, लोखम ताल, पार्वती ताल, तड़ाग ताल (कुमाऊं क्षेत्र) इत्यादि।

उत्तराखंड के प्रमुख दर्रे- बरास- 5365मी. (उत्तरकाशी), माना- 6608मी. (चमोली), नोती 5300मी. (चमोली), बोल्छाधुरा- 5353 मी. (पिथौरागढ़), कुरंगी-वुरंगी- 5564 मी. (पिथौरागढ़) लोवेपुरा- 5564 मी. (पिथौरागढ़), लमप्याधुरा- 5553 मी. (पिथौरागढ़), लिपुलेश- 5129 मी. (पिथौरागढ़), ऊंटाबुरा, थांगला, ट्रेलपास, मलारीपास, रालमपास, सोग चोग ला पुलिग ला, तुनजुनला, मरहीला, चिरीचुन दर्रा।

उत्तराखंड के वन अभ्यारण्य- 1. गोविंद वन जीव विहार 2. केदारनाथ वन्य जीव विहार 3. अस्कोट जीव विहार 4. सोना नदी वन्य जीव विहार 5. विनसर वन्य जीव विहार।

उत्तम सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक

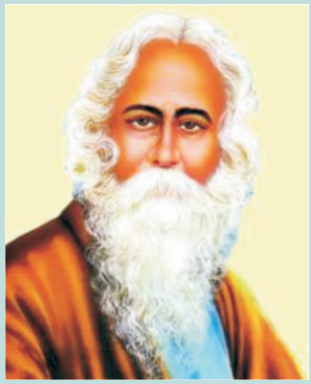

''आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है जिसका एक-एक दल, एक-एक प्रांतीय भाषा और उसका साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियां जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने घर में रानी बनकर रहें। प्रांत के जनगण की हार्दिक चिंता की प्रकाशभूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत-भारती विराजती रहे।''

-विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

एक सत्य दूसरे सत्य का विरोधी नहीं हो सकता। -हूकर

हिंदी भाषा और राजभाषा

भाषा अपने समाज के जीवन के प्रत्येक स्तर को अभिव्यक्त करती है जिसमें उस समाज की सभ्यता, संस्कृति, उसका राजनीतिक व सामाजिक विकास और व्यवस्था सब कुछ अंतर्निहित होता है। संरचनात्मक दृष्टि से भाषा एक होते हुए भी व्यवहार और प्रयोग की दृष्टि से बहुआयामी हो जाती है। किसी देश के सांस्कृतिक विकास के लिए उसकी अपनी समृद्ध भाषा होनी आवश्यक है। भारत में अधिकांश लोगों द्वारा उत्तर भारतीय, जो भारोपीय भाषा परिवार से संबंधित हैं तथा दक्षिण भारतीय या द्रविण भाषाएं बोली जाती हैं। पर इन दोनों भाषा वर्गों की शब्दावली संस्कृत शब्दों से परिपूर्ण है। केवल भारतीय भाषाएं ही देश की एकता तथा सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण में सहायक हो सकती हैं। संस्कृत तो भारत वर्ष की अस्मिता की प्रतीक है पर आधुनिक भाषाओं में से हिंदी ही उसकी उत्तराधिकारिणी है और उसमें देश की समूची पहचान अभिव्यक्त होती है।

भारत सांस्कृतिक रूप से अनेकता में एकता का उदाहरण है और पूरे देश का सांस्कृतिक उत्साह एक है। इसका यह कारण देश का सांस्कृतिक एवं मानसिक संबंध तथा एकता एवं अखंडता है। स्वाभाविक रूप से हिंदी भाषियों की संख्या सबसे अधिक है। हिंदी न केवल भारत की प्रमुख भाषा है पर संसार में भी उसका स्थान तृतीय है। हिंदी की देवनागरी लिपि को सबसे अधिक वैज्ञानिक एवं ध्वन्यात्मक घोषित किया गया है।

जिस प्रकार भारतीय संस्कृति में सामासिकता की प्रवृत्ति है, उसी तरह हिंदी भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों को अपना बनाकर प्रयोग में लाने की अद्‌भुत क्षमता है। इंटरनेट ने हिंदी की क्षमता को और अधिक बढ़ाया है। हिंदी एक तरह से इंटर कल्चर लैंग्वेज, जिसे अंतरसंबंधी भाषा कहना ज्यादा उपयुक्त होगा, के तौर पर आगे बढ़ रही है। धीरे-धीरे हिंदी का अंतरराष्ट्रीय वर्चस्व बढ़ रहा है। विश्व के लोग समझ रहे हैं कि हिंदी में संभाषण सरल, सुबोध और सर्वग्राहय है। शिक्षा, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, हिंदी ने धीरे-धीरे अपना स्थान बना लिया है।

हिंदी तो भारत की प्रतिनिधि भाषा है और समूचे भारत-राष्ट्र का प्रवेश द्वार है। वह भाषा जो अभारतीय विद्यार्थियों के लिए संस्कृति और सभ्यता की अखंडता तथा भांति-भांति के मार्ग खोल देती है।

अज्ञेय ने लिखा है- ''मैं अपनी जुबान से लड़ाई करता हूं, मैं शब्दों की खोज में मेहनत करता हूं, मैं कभी-कभी गाली भी देता हूं अपनी जुबान को, पर मैं हमेशा अपनी जुबान के संपर्क में हूं, मुझे लगता है कि ये मैं ही हूं जो अपनी अस्मिता की खोज करता हूं, जब मैं हिंदी में बात करता हूं।''

भाषा पर किसी का एकाधिकार नहीं हो सकता, दुनिया में जल और वायु एक ही है, पर पग-पग पर उसके स्वरूप और तेवर में अंतर देखने को मिलता है फिर भाषा को कोई कैसे कैद कर सकता है। किसी भी भाषा को सहजता और सुगमता ही लोकप्रिय बनाती है और हिंदी अपने अंदर इन भावों को समेटे हुए है। यह भारत के आम आदमी की आवश्यकता की भाषा के रूप में जैसे प्रकृति की कोख से पैदा हुई है। यह भारत की संपर्क भाषा है, लोक भाषा, जन भाषा है और अधिसंख्य लोगों की सहज वाणी भी है। विदेशों में हिंदी शिक्षण एवं अनुसंधान से अन्य देशों का भारत के साथ एक विशेष सांस्कृतिक संपर्क कायम हुआ है। हिंदी के भारत में राजभाषा घोषित होते ही प्राग के चार्ल्स विश्वविद्यालय में प्राचीन भारत-विद्या के साथ-साथ अध्ययन-अध्यापन तथा शोध की विषय बन गई।

हिंदी ने आज विश्व मंच पर अपनी सशक्त एवं गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की है। विश्व का हर एक समाज, जन-समुदाय इसे सीखने-परखने, जानने व समझने के लिए आतुर है, इसीलिए कि इसमे जीवंतता है, आत्मीयता है, नाते-रिश्तों का बोध है, इसमें अनुभूतियां हैं, एक विशेष प्रकार का एहसास है, इसमें संगीत है, बोधगम्यता है, अर्थों की स्पष्ट प्रतीति है, इसमें वह सब कुछ है, जो एक संपूर्ण एवं संपन्न भाषा के लिए आवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब देश का संविधान लिखा जा रहा था, उस समय देश में सरकार एवं जनता के स्तर पर संपर्क तथा पत्राचार के लिए एक भाषा की जरूरत महसूस हुई। भारत की संविधान सभा में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का प्रस्ताव एक दक्षिण भारतीय श्री अनंत शयनम आयंगर ने प्रस्तुत किया था। काफी बहस व चर्चा के बाद 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा के रूप में चुना गया। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए संविधान में कई धाराएं एवं अनुच्छेद का प्रावधान किया गया। संविधान के भाग 5, 6 व 17 में क्रमशः 120, 210 तथा 343 से 351 तक कुल 11 अनुच्छेदों में राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए हैं।

संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधानों एवं उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रपति ने 1956 में श्री बी.जी.खेर की अध्यक्षता में एक राजभाषा आयोग का गठन किया जो राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए संस्तुतियां कर सके।

राजभाषा अधिनियम, 1963 - यथा संशोधित, 1967 में अन्य बातों के अलावा धारा 3(3) का प्रमुख रूप से अनुपालन का उल्लेख है, जिसके अनुसार संघ सरकार के कुछ प्रमुख दस्तावेज़ जैसे- सामान्य आदेश, संकल्प, नियम, अधिसूचना, प्रेस-विज्ञप्ति, प्रशासनिक रिपोर्ट, करार, निविदा, संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले कागज-पत्र, विज्ञापन आदि अनिवार्यतः द्विभाषी यानि हिंदी व अंग्रेजी में जारी किए जाएं।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) की द्विभाषिता की स्थिति को ध्यान में रखते हुए संसद ने राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को अच्छी तरह से सुनिश्चित करवाने के लिए 1968 में राजभाषा संकल्प जारी किया, जिसमें राजभाषा हिंदी के सक्रिय कार्यान्वयन हेतु वार्षिक कार्यक्रम तैयार करने, राजभाषा हिंदी के साथ-साथ सभी प्रादेशिक भाषाओं का विकास एवं प्रचार-प्रसार करने, विद्यार्थियों को अंग्रेजी तथा अपनी मातृभाषा के अलावा किसी तीसरी भाषा का भी अध्ययन करने तथा संघ लोक सेवा आयोग तथा अन्य विभागीय परीक्षाएं अंग्रेजी अथवा हिंदी में देने की छूट देने का उल्लेख है।

गृह मंत्रालय के अधीन 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना के तुरंत बाद 1976 में 12 राजभाषा नियम बनाए गए। संघ सरकार के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी से यह अपेक्षा रहती है कि वे इन सभी 12 नियमों की जानकारी रखे ताकि उसे पता रहे कि उसे अपने सरकारी कामकाज में कितना काम हिंदी में करना है।

राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में राजभाषा संबंधी समितियों की विशेष महत्ता है। वर्तमान में राजभाषा संबंधी समितियों के नाम निम्नानुसार हैं :

1. केंद्रीय हिंदी समिति
2. केंद्रीय हिंदी उप समिति
3. संसदीय राजभाषा समिति
4. हिंदी सलाहकार समितियां
5. केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
6. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
7. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ल
उप प्रबंधक (राजभाषा)

मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्तव्य है। -विनोबा भावे

सूचना का अधिकार एवं पारदर्शिता

भारतीय व्यवस्था में अधिनियमों की कोई कमी नहीं है फिर भी सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005, भारतीयों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है।

स्वतंत्र भारत के इतिहास में सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 सरकारी कार्यकलाप में पारदर्शिता लाने में अहम भूमिका निभा रहा है। यह आम आदमी का कानूनी अधिकार बन गया है।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का प्रमुख उद्देश्य सरकार एवं सरकारी तंत्र को जनता के प्रति जवाबदेह बनाना है। यह बात इसी से साबित होती है कि इस अधिनियम में एक जगह यह भी लिखा है कि जो सूचना हमारे माननीय सांसदों को उपलब्ध करायी जा सकती है उसे एक आम नागरिक को देने से इंकार नहीं किया जा सकता है।

भारत में सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005, 12 अक्तूबर, 2005 में लागू किया गया था। लागू होने के महज कुछ वर्षों में ही इस अधिनियम ने न केवल आम नागरिक को शक्तिशाली बना दिया है बल्कि बढ़ती निरंकुशता, पक्षपात व भ्रष्टाचार पर भी लगाम लगाने का कार्य किया है।

इस अधिनियम की सबसे बड़ी विशेषता सूचना प्रदान करने की तीन स्तरीय समयबद्ध प्रणाली है, जिसमें जहां जन सूचना अधिकारी प्रथम स्तर है वहीं अपील प्राधिकारी दूसरा स्तर है तो केंद्रीय सूचना आयोग तीसरा स्तर है। इस प्रणाली ने जहां शासकीय कार्य में पारदर्शिता बढ़ायी है वहीं इसने स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं कार्य की गति बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाई है।

अगर हम इसे नागरिकों के हाथ में ब्रह्मास्त्र कहें तो शायद यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह एक ऐसा माध्यम बन गया है जिससे कोई भी सामग्री जैसे सरकारी रिकॉर्ड, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, मत, परामर्श, लॉगबुक, आदेश, नमूने जिसका जनहित से सरोकार है, मांगी जा सकती है।

सरकारी क्षेत्र में पारदर्शिता एवं जवाबदेही के लिए सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 नागरिकों के पास एक कारगर कानूनी अधिकार है। इसके सफल क्रियान्वयन से जहां एक ओर देश में लोकतंत्र सशक्त होगा एवं नागरिकों के मानवाधिकारों की संरक्षा सुनिश्चित होगी वहीं दूसरी ओर देश में समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा तथा विश्व में भारत की छवि सुधरेगी। अतः समय-समय पर सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के क्रियान्वयन की समीक्षा की जानी चाहिए तथा सभी बाधाओं को दूर करने के उपाय किए जाने चाहिए।

प्रकाश कुमार
उप प्रबंधक (मा.सं.)

इकलौता तरीका महान कार्य करने का यह है कि आप अपने कार्य से प्यार करें।

हम चिल्लाते क्यों हैं गुस्से में ?

एक बार एक संत अपने शिष्यों के साथ बैठे थे। अचानक उन्होंने सभी शिष्यों से एक सवाल पूछा। बताओ जब दो लोग एक दूसरे पर गुस्सा करते हैं तो जोर-जोर से चिल्लाते क्यों हैं ? शिष्यों ने कुछ देर सोचा और एक ने उत्तर दिया, ''हम अपनी शांति खो चुके होते हैं इसलिए चिल्लाने लगते हैं।'' संत ने मुस्कुराते हुए कहा, ''दोनों लोग एक-दूसरे के काफी करीब होते हैं तो फिर धीरे-धीरे भी तो बात कर सकते हैं। आखिर वह चिल्लाते क्यों हैं ?'' कुछ और शिष्यों ने भी जवाब दिया लेकिन संत संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने खुद उत्तर देना शुरू किया। वह बोले, ''जब दो लोग एक-दूसरे से नाराज होते हैं तो उनके दिलों की दूरियां बहुत बढ़ जाती हैं। जब दूरियां बढ़ जाएं तो आवाज को पहुंचाने के लिए उसका तेज होना जरूरी है। दूरियां जितनी ज्यादा होंगी उतनी तेज चिल्लाना पड़ेगा। दिलों की यह दूरियां ही दो गुस्साए लोगों को चिल्लाने पर मजबूर कर देती हैं।'' वह आगे बोले, ''जब दो लोगों में प्रेम होता है तो वह एक-दूसरे से बड़े आराम से और धीरे-धीरे बात करते हैं। प्रेम दिलों को करीब लाता है और करीब तक आवाज पहुंचाने के लिए चिल्लाने की जरूरत नहीं। जब दो लोगों में प्रेम और भी प्रगाढ़ हो जाता है तो वह फुसफुसा कर भी एक-दूसरे तक अपनी बात पहुंचा लेते हैं। इसके बाद प्रेम की एक अवस्था यह भी आती है कि फुसफुसाने की जरूरत भी नहीं पड़ती। एक-दूसरे की आंख में देखकर भी समझ आ जाता है कि क्या कहा जा रहा है।'' शिष्यों की तरफ देखते हुए संत बोले, ''अब जब भी कभी बहस करें तो दिलों की दूरियों को न बढ़ने दें। शांत चित्त और धीमी आवाज में बात करें। ध्यान रखें कि कहीं दूरियां इतनी न बढ़ जाएं कि वापस आना ही मुमकिन न हो।''

प्रवीण गुप्ता
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

नेत्र ज्योति मुद्रा

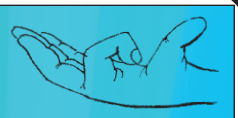

विधि : तर्जनी अंगुली को मोड़ कर अंगूठे के मूल (जड़) में लगाएं। शेष तीनों अंगुलियों को सीधा रखें। 16-48 मिनट तक इस मुद्रा का अभ्यास प्रातः या सायं करें।

लाभ : 1. आँखों की सभी बीमारियां इस मुद्रा से ठीक होती हैं।
2. जिन छोटे बच्चों को चश्मा लग गया हो, नेत्र ज्योति मुद्रा के प्रयोग से उनका चश्मा उतर सकता है।
3. आँखों से कम दिखना, जाला पड़ जाना, फूला पड़ जाना आदि रोगों में यह मुद्रा लाभ पहुंचाती है।

कर्म ही विश्व में प्रधान है। -तुलसीदास

साहिल न मिला

मैं सागर की वह लहर हूं,
जो दूर-दूर तक जाती हूं,
मंजिल की तलाश में,
लेकिन निराश हो कर लौट आती हूं,
फिर सागर में बिना मंजिल तक पहुचें।

देखा है मैंने अक्सर कई किश्तियों को,
सागर में डगमगाते-हिचकोले खाते हुए,
धीरे-धीरे एक लंबा सफर करके,
कैसे साहिल पर पहुंचती हैं,
और मंजिल को पा जाती हैं।

हिम्मत करती हूं मंजिल ढूंढने की,
बार-बार आती हूं किनारे पर,
साहिल की तलाश में।

फिर कभी याद आती हैं वो किश्तियां,
जिन्हें देखा है मैंने डूबते हुए,
जो घिर जाती हैं तूफान में,
फंस जाती हैं भंवर में,
जो नहीं पहुंच पाती मंजिल तक,
समा जाती हैं सदा के लिए सागर की गहराई में,

डरती हूं उन किश्तियों का अंजाम देखकर,
कहीं बिछुड़ न जाऊं सागर से,
मंजिल की तलाश में,
सूख न जाऊं रेत में,
साहिल की तलाश में,
ठीक उन किश्तियों की तरह,
जिन्हें कभी मंजिल नहीं मिली,
कोई साहिल न मिला।

उत्तम सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक

गुदगुदी

संता एक सॉफ्टवेयर कंपनी में अपना इंटरव्यू देने जाता है।
इंटरव्यू लेने वाला: JAVA के कोई चार Version बताओ ?
संता: मर JAVA, मिट JAVA, मैं सदके JAVA और लुट JAVA!
इंटरव्यू लेने वाला: अब तुस्सी घर JAVA !

संता बंता को गुस्से से बोल रहा था।
संता: यार, जब मैंने तुझे खत लिखा था कि मेरी शादी में जरूर आना। तो तुम आए क्यों नहीं ?
बंता: ओह यार, पर मुझे खत मिला ही नहीं।
संता: मैंने लिखा तो था कि खत मिले या ना मिले तुम जरूर आना।

संता: पप्पू, तुम्हारे गणित में इतने कम नंबर क्यों आए ?
पप्पू: गैर हाजिरी के कारण।
संता: क्या तुम गणित की परीक्षा के दिन गैर हाजिर थे ?
पप्पू: मैं नहीं मेरे बगल में बैठने वाली लड़की गैर हाजिर थी।

मुंशी प्रेमचंद : कलम का सिपाही

प्रेमचंद के उपनाम से लिखने वाले धनपत राय श्रीवास्तव हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। उन्हें मुंशी प्रेमचंद व नवाबराय के नाम से भी जाना जाता है और उपन्यास सम्राट के नाम से अभिहित किया जाता है। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया, जिसने पूरी शताब्दी के साहित्य का मार्ग-दर्शन किया। आगामी एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी। उनका नाम हिंदी साहित्य की एक ऐसी विरासत है, जिसके बिना हिंदी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। कथा सम्राट प्रेमचंद का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति में पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसमें आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन किया। 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र 'हंस' शुरू किया और 1932 के आरंभ में जागरण नामक एक साप्ताहिक भी निकाला। उन्होंने मूल रूप से हिंदी में 1915 से कहानियां लिखना और 1918 (सेवासदन) से उपन्यास लिखना शुरू किया। प्रेमचंद ने करीब तीन सौ कहानियां, लगभग एक दर्जन उपन्यास और कई लेख लिखे। उन्होंने कुछ नाटक भी लिखे और कुछ अनुवाद कार्य भी किया। प्रेमचंद की कई साहित्यिक कृतियों का अंग्रेजी, रूसी, जर्मन सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। 'गोदान' उनकी कालजयी रचना है और कफन उनकी अंतिम कहानी मानी जाती है। प्रेमचंद की रचना-दृष्टि विभिन्न साहित्य रूचि में प्रवृत्त हुई। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, संपादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की।

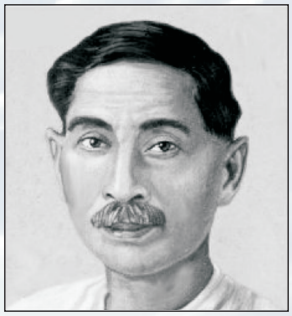

प्रेमचंद के उपन्यास न केवल हिंदी उपन्यास साहित्य में बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्य में मील का पत्थर हैं। उनका पहला उर्दू उपन्यास (अपूर्ण) 'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य' उर्दू साप्ताहिक 'आवाज-ए-खल्फ' में 8 अक्तूबर, 1903 से 1 फरवरी, 1905 तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। उनके दूसरे उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' का हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित हुआ। चूंकि प्रेमचंद मूल रूप से उर्दू के लेखक थे और उर्दू से हिंदी में आए थे, इसलिए उनके सभी आरंभिक उपन्यास मूल रूप से उर्दू में लिखे गए और बाद में उनका हिंदी तर्जुमा किया गया। उन्होंने 'सेवासदन' (1918) उपन्यास से हिंदी उपन्यास 'बाजारे-हुस्न' नाम से पहले उर्दू में लिखा, लेकिन इसका हिंदी रूप 'सेवासदन' पहले प्रकाशित कराया। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार 'सेवासदन' में व्यक्त मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है। इसके बाद किसान जीवन पर उनका पहला उपन्यास 'प्रेमाश्रम' (1921) आया। इसका मसौदा भी पहले उर्दू में 'गोशाए-आफियत' नाम से तैयार हुआ था, लेकिन 'सेवासदन' की भांति इसे पहले हिंदी में प्रकाशित कराया। 'प्रेमाश्रम' किसान जीवन पर लिखा हिंदी का संभवतः पहला उपन्यास है। यह अवध में किसान आंदोलनों के दौर में लिखा गया। इसके बाद 'रंगभूमि' (1925), 'कायाकल्प' (1926), 'निर्मला' (1927), 'गबन' (1931), 'कर्मभूमि' (1932) से होता हुआ यह सफर 'गोदान' (1936) तक पूर्णता को प्राप्त हुआ। गोदान का हिंदी साहित्य में ही नहीं, विश्व साहित्य में भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें प्रेमचंद की साहित्य संबंधी विचारधारा 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' से

'आलोचनात्मक यथार्थवाद' तक की पूर्णता प्राप्त करती है। एक सामान्य किसान को पूरे उपन्यास का नायक बनाना भारतीय उपन्यास परंपरा की दिशा बदल देने जैसा था। 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है। उनके देहांत के कारण यह पूरा न हो सका। प्रेमचंद के उपन्यासों का मूल मध्य-भारतीय ग्रामीण जीवन था। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को जो ऊंचाई प्रदान की, वह परवर्ती उपन्यासकारों के लिए एक चुनौती बनी रही। प्रेमचंद के उपन्यास भारत और दुनिया की कई भाषाओं में अनूदित हुए।

प्रेमचंद ने अपनी कला के शिखर पर पहुंचने के लिए अनेक प्रयोग किए। जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था, सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रूसी साहित्यकार थे। लेकिन होते-होते उन्होंने गोदान जैसी कालजयी उपन्यास की रचना की, जो कि आधुनिक क्लासिक माना जाता है। उन्होंने चीजों को खुद गढ़ा और खुद आकार दिया। जब भारत का स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था, तब उन्होंने कथा साहित्य द्वारा हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं को जो अभिव्यक्ति दी, उसने सियासी सरगर्मी, जोश और आंदोलन- सभी को उभारा और उसे ताकतवर बनाया। इससे उनका लेखन भी ताकतवर होता गया। प्रेमचंद इस अर्थ में निश्चित रूप से हिंदी में प्रगतिशील लेखक कहे जा सकते हैं। प्रेमचंद ने हिंदी में कहानी की एक परंपरा को जन्म दिया और एक पूरी पीढ़ी उनके पद-चिह्नों पर आगे बढ़ी। प्रेमचंद एक क्रांतिकारी रचनाकार थे। उन्होंने न केवल देशभक्ति बल्कि समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को देखा और उनको कहानी के माध्यम से पहली बार लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने उस समय के समाज की जो भी समस्याएं थी, उन सभी को चित्रित करने की शरूआत कर दी थी। प्रेमचंद हिंदी सिनेमा में

प्रेमचंद द्वारा उनके पैतृक गांव, लमही में बनाया गया उनका घर

सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्यकारों में से हैं। सत्यजीत रे ने उनकी दो कहानियों- 1977 में शतरंज के खिलाड़ी और 1981 में सद्गति पर यादगार फिल्में बनाई। उनके देहांत के दो वर्ष के बाद सुब्रहमण्यम ने 1938 में 'सेवासदन' उपन्यास पर फिल्म बनाई। 1977 में मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी 'कफन' पर आधारित 'ओका ऊरी कथा' नाम से तेलुगू फिल्म बनाई, जिसको सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। 1963 में गोदान और 1966 में गबन उपन्यास पर लोकप्रिय फिल्में बनीं। 1980 में उनके उपन्यास पर बना टी.वी. धारावाहिक 'निर्मला' भी बहुत लोकप्रिय हुआ।

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म बनारस से चार मील दूर लमही गांव में सावन बदी 10, संवत् जुलाई, सन् 1880 ई., शनिवार को हुआ था। इनकी माता का नाम आनंदी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ, जो सफल नहीं रहा। उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया और 1903 में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संतानें हुईं - श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव।

प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को उनके जन्मशती अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक ब्रिटिश लेख है, जिसका चित्र दाहिनी ओर दिया गया है। यहां उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है, जहां उनकी एक वक्षप्रतिमा भी है। प्रेमचंद की 125वीं सालगिरह पर सरकार की ओर से घोषणा की गई कि वाराणसी से लगे इस गांव में प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे।

जीवन के अंतिम दिनों में प्रेमचंद गंभीर रूप से बीमार पड़े और लंबी बीमारी के बाद 8 अक्तूबर, 1936 को उनका निधन हो गया।

रजनी कुमारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

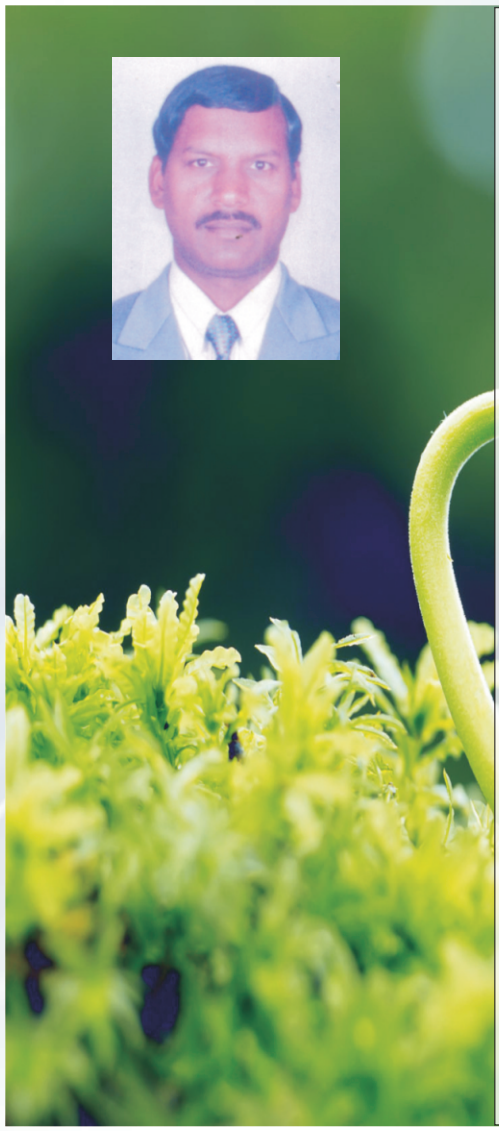

पैगाम

बिगड़ा हुआ है काम, तो उसको संवारना।
डूबा हुआ है नाम, तो उसको उभारना।।
पीछे कोई हटे, तो ना उसको पुकारना।
तुम आप बढ़कर दोस्तों, मैदान मारना।।
हिम्मत ना हारना कभी, हिम्मत ना हारना।।

रास्ता है जिंदगी का कठिन, पर बढ़े चलो।
माना है खतरा इसमें, संभल कर बढ़े चलो।।
मंजिल नजर के सामने है गर, बढ़े चलो।
रहमत खुदा की तुम पै, मुक्करर्र बढ़े चलो।।
हिम्मत ना हारना कभी, हिम्मत ना हारना।।

मुश्किल अगर है काम, तो जी तोड़कर करो।
ऊंचा अगर है बाम, कमर बांध कर चढ़ो।।
रास्ता अगर कठिन है, तो सीधे चले चलो।
आसान हर एक बात है, मेरी अगर सुनो।।
हिम्मत ना हारना कभी, हिम्मत ना हारना।।

झूठों के पास भूल के, जाना ना तुम कभी।
ऐ दोस्तों बहाने, बनाना ना तुम कभी।।
हिम्मत के वक्त मुंह को, छुपाना ना तुम कभी।
मेहनत के वक्त जान, चुराना ना तुम कभी।।
हिम्मत ना हारना कभी, हिम्मत ना हारना।।

शशि भूषण
वरिष्ठ संचालक

श्रम श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेष्ठता का मूल मंत्र है -सेनेका

संयोग

सोचो, कभी ऐसा हो तो क्या हो ?

- आपका और आपके बेटे का जन्मदिन एक ही तारीख को हो।
- आपने अपने परिवार के साथ फिल्म देखने के लिए ऑफिस से छुट्टी ली। जब आप थियेटर पहुंचे, तो देखा कि आपका सहकर्मी भी उसी थियेटर में वही पिक्चर देखने के लिए अपने परिवार के साथ आया हो। हालांकि आप दोनों ने पहले इस बारे में एक-दूसरे से कोई विचार-विमर्श नहीं किया।
- आप ऑफिस से लौटते समय सब घरवालों के लिए समोसा और जलेबी लेकर जाएं। लेकिन जब घर पहुंचे तो वहां पहले से ही आपकी पत्नी भी समोसा और जलेबी लेकर आई हों।
- जब कभी भी आपके चाचाजी आपसे मिलने आपके घर आएं, आपने एक ही रंग का परिधान पहना हो।
- आप दो साल बाद किसी ट्रेन से दिल्ली से मुंबई जा रहे हों तो आपके साथ वाली सीट पर वही यात्री बैठा

मिले, जो दो साल पहले भी इसी रूट में ट्रेन की यात्रा में मिला था।

- आप एक सेमिनार में गए। वहां उपस्थित 10 लोगों में से 5-6 लोगों का एक ही नाम हो।

ऐसी कोई-न-कोई घटना, कभी-न-कभी हम सभी के जीवन में घटती है। हम इसे हंसकर संयोग कह देते हैं। संयोग माने इत्तिफ़ाक। शब्दकोश की परिभाषा के अनुसार यदि दो या दो से अधिक घटनाएं या स्थितियां, समय व स्थान द्वारा संबंधित हों, परंतु उनके इस संबंध के पीछे कोई ठोस कारण दिखाई न पड़े तो उसे संयोग कहते हैं। दूसरे शब्दों में संयोग उन घटनाओं की श्रंखला है जो अचानक ही घटित होती हैं, परंतु फिर भी योजनाबद्ध प्रतीत होती हैं।

संयोग को अंग्रेजी में 'कोइन्सिडेंस (Coincidence)' कहा जाता है। कोइन्सिडेंस लैटिन भाषा 'cum' यानि 'एक साथ' और 'इन्सीडेंस' यानि 'गिरना या होना' से निकला है। भौतिक विज्ञान ने कोइन्सिडेंस के इसी शाब्दिक अर्थ को पकड़ा। जैसे - प्रकाश की दो किरणें जब एक साथ, एक ही समय पर, एक बिंदु पर गिरती हैं, तो उन्हें कोइन्सिडेंस कहा जाता है। कम्प्यूटर की कार्य-शैली में भी संयोग की भूमिका है। कम्प्यूटर की भाषा में इसे 'सिमुलेशन' कहा गया है। जब हम एक कागज पर बेतरतीब ढंग से सैकड़ों बिंदु बनाते हैं, तो हमेशा देखा गया है कि उनमें से 4 से लेकर 8 बिंदु वाले कई ऐसे समूह हैं जो एक सीधी रेखा में जोड़े जा सकते हैं।

मतलब है कि ये संयोग जीवन के हर पहलू, हर क्षेत्र से जुड़ें हैं। पर कई बार कुछ संयोग इतने अद्‌भुत व असाधारण होते हैं कि उन्हें देखने-सुनने वाला दांतों तले अंगुली दबा बैठता है। उसके भीतर प्रश्न उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं। कैसे प्रश्न ? हम नहीं बताएंगे। आप इन प्रश्नों का खुद अनुभव करें। हम आपके सामने कुछ ऐसे ही हैरत-अंगेज, विस्मयकारी, अनूठे संयोग प्रस्तुत कर रहे हैं, जो 100 फीसदी सत्य घटनाएं हैं।

21 जुलाई, 1975 में 'द स्कन्थोप ईवनिंग टेलीग्राफ' नामक अखबार के नौवें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में एक ऐसी खबर छपी, जिसने पूरे विश्व के वैज्ञानिकों की नींद उड़ा दी। खबर थी कि एक 17 साल का युवा, अर्सकिन

लॉरेंस, हेमिल्टन, बरमूडा में एक दुर्घटना का शिकार हुआ। वह अपनी बाइक पर सवार था, जब सामने से आती एक टैक्सी ने उसे जोरदार टक्कर मारी। घटनास्थल पर ही युवा की मृत्यु हो गई। आप सोच रहे होंगे कि इस खबर में ऐसा अनोखा क्या है ? ऐसे समाचार से तो समाचार-पत्र भरे रहते हैं। पर जरा धैर्य रखिए। खबर यहीं समाप्त नहीं होती। आगे पढ़िये...करीब एक साल पहले अर्सकिन के सगे भाई नैबीले की भी इसी स्थल पर यानि हैमिल्टन, बरमूडा में मृत्यु हो गई थी। उस समय नैबीले की उम्र भी 17 साल की थी। वह भी उसी बाइक पर सवार था जिस पर अर्सकिन। उसकी बाइक की भी एक टैक्सी से टक्कर हुई थी। टैक्सी भी वही थी। चौंका देने वाली बात यह है कि न केवल उस टैक्सी का ड्राईवर वही था, बल्कि दोनों समय में टैक्सी में बैठा यात्री भी वही था। विश्वास नहीं होता न ! मीडिया को भी नहीं हुआ था इसीलिए मीडिया के लोग इस सूचना की तह तक गए, एक-एक तथ्य खंगाला। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस से इस रिपोर्ट के प्रमाण प्राप्त हुए। आखिरकार उन्हें इस खबर को सत्य मानना ही पड़ा। तब कहीं जाकर यह रिपोर्ट अखबार की सुर्खियां बनी।

अब बताइए, क्या यह सब कुछ संयोग था ? यदि हां, तो कैसा अद्‌भुत संयोग था ? क्या इसे पढ़कर मन में प्रश्न नहीं उठते ? प्रश्न अनेक उठते हैं। आप भी अपने मन में उठ रहे प्रश्नों को इस श्रंखला में जोड़ लें। हम बढ़ते हैं, अगले अद्‌भुत संयोग की ओर -

सन् 1883 में हैनरी जिगलैंड ने अपनी प्रेमिका से रिश्ता तोड़ दिया। इस सदमें को वह बर्दाश्त नहीं कर पाई और उसने आत्महत्या कर ली। क्रोधावश में आकर लड़की के भाई ने हैनरी पर गोली चला दी और फिर खुद की भी जान ले ली। परंतु हैनरी की किस्मत अच्छी थी। गोली उसे छू कर निकल गई और साथ ही एक वृक्ष में जा धंसी। कई सालों बाद, हैनरी ने उस वृक्ष को काटने की सोची। चूंकि वह वृक्ष बहुत विशाल था, इसलिए डायनामाइट द्वारा उसे उड़ाया गया। विस्फोट होने पर वृक्ष में धंसी गोली तेजी से बाहर निकली और सीधे हैनरी के सिर में जा धंसी और हैनरी की उसी क्षण मृत्यु हो गई। कैसा अद्‌भुत संयोग है न ? उसी गोली से हैनरी की मौत होना जिससे सालों पहले वह बच गया था।

इन सभी अद्‌भुत, आश्चर्य चकित करने वाले संयोगों के आगे वैज्ञानिक मौन हो जाते हैं। उनकी बौद्धिक कसरत उन्हें कोई उत्तर नहीं सुझा पाती। वे इन्हें आकस्मिक घटित घटनाएं कहकर अपना पल्ला झाड़ लेना चाहते हैं। परंतु यदि हम शांत व एकाग्र हो इन घटनाओं पर मनन-चिंतन करें, तो हमें यह जानने में देर नहीं लगेगी कि इन घटनाओं के पीछे भी कोई लेखक है। इन्हें निर्देशित करने वाला कोई निर्देशक है और वह सत्ता अन्य कोई नहीं, अपितु भगवान (God) है। इन संयोगों के द्वारा वह हम अहंकारी मनुष्यों को यह अनुभूति कराना चाहता है कि हम चाहे कितने ही सयाने क्यों न हो जाएं पर उसके द्वारा रचित व संचालित सृष्टि को कभी अपनी सीमित बुद्धि द्वारा पूरी तरह समझ नहीं पाएंगें।

(साभार-एक आध्यात्मिक पत्रिका)

प्रमोद कुमार द्विवेदी
उच्च श्रेणी लिपिक

जो वाणी सत्य को संभालती है उस वाणी को सत्य संभालता है। -विनोबा भावे

बोध कथा

एक कांच की बरनी और दो कप चाय

जीवन में जब सब कुछ एक साथ और जल्दी-जल्दी करने की इच्छा होती है, सब कुछ तेजी से पा लेने की इच्छा होती है और हमें लगने लगता है कि चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं, उस समय ये बोध कथा ''कांच की बरनी और दो कप चाय'' हमें याद आती है।

दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर कक्षा में आए और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाने वाले हैं।

उन्होंने अपने साथ लाई एक कांच की बड़ी बरनी (जार) टेबल पर रखी और उसमें टेबल टेनिस की गेंदें डालने लगे और तब तक डालते रहे जब तक कि उसमें एक भी गेंद समाने की जगह नहीं बची। उन्होंने छात्रों से पूछा, ''क्या बरनी पूरी भर गई ?'' हां... आवाज आई। फिर प्रोफेसर साहब ने छोटे - छोटे कंकर उसमें भरने शुरू किए। धीरे - धीरे बरनी को हिलाया तो काफी सारे कंकर उसमें जहां जगह बची थी, समा गए। फिर से प्रोफेसर साहब ने पूछा, ''क्या अब बरनी भर गई है ?'' छात्रों ने एक बार फिर हां कहा। अब प्रोफेसर साहब ने रेत की थैली से हौले-हौले उस बरनी में रेत डालना शुरू किया, वह रेत भी उस जार में जहां संभव था वहां बैठ गया। अब छात्र अपनी नादानी पर हंसे। फिर प्रोफेसर साहब ने पूछा, ''क्यों अब तो यह बरनी पूरी भर गई ना ?'' हां अब तो पूरी भर गई है, सभी ने एक स्वर में कहा। सर ने टेबल के नीचे से चाय के दो कप निकालकर उसमें भरी चाय जार में डाली, चाय भी रेत के बीच स्थित थोड़ी सी जगह में सोख ली गई।

प्रोफेसर साहब ने गंभीर आवाज में समझाना शुरू किया- इस कांच की बरनी को तुम लोग अपना जीवन समझो। टेबल टेनिस की गेंदें सबसे महत्वपूर्ण भाग अर्थात भगवान, परिवार, बच्चे, मित्र, स्वास्थ्य और शौक हैं। छोटे कंकर मतलब तुम्हारी नौकरी, कार, बड़ा मकान आदि हैं और रेत का मतलब और भी छोटी-छोटी बेकार सी बातें, मनमुटाव, झगड़े हैं। अब यदि तुमने कांच की बरनी में सबसे पहले रेत भरा होता तो टेबल टेनिस की गेंदों और कंकरों के लिए जगह ही नहीं बचती या कंकर भर दिए होते तो गेंदें नहीं भर पाती, रेत जरूर आ सकता था।

ठीक यही बात जीवन पर लागू होती है। यदि तुम छोटी-छोटी बातों के पीछे पड़े रहोगे और अपनी ऊर्जा उसमें नष्ट करोगे तो तुम्हारे पास मुख्य बातों के लिए अधिक समय नहीं रहेगा। मन के सुख के लिए क्या जरूरी है, ये तुम्हें तय करना है। अपने बच्चों के साथ खेलो, बगीचे में पानी डालो, सुबह पत्नी के साथ घूमने निकल जाओ, घर के बेकार सामान को बाहर निकाल फेंको, मेडिकल चेक-अप करवाओ। टेबल टेनिस गेंदों की फिक्र पहले करो, वही महत्वपूर्ण है। पहले तय करो कि क्या जरूरी है ? बाकी सब तो रेत है। छात्र बड़े ध्यान से सुन रहे थे। अचानक एक ने पूछा, ''सर, लेकिन आपने यह नहीं बताया कि चाय के दो कप क्या हैं ?'' प्रोफेसर मुस्कुराए और बोले, ''मैं सोच ही रहा था कि अभी तक यह सवाल किसी ने क्यों नहीं किया ? इसका उत्तर यह है कि जीवन हमें कितना ही परिपूर्ण और संतुष्ट लगे, लेकिन अपने खास मित्र के साथ दो कप चाय पीने की जगह हमेशा होनी चाहिए।''

पूजा सारस्वत
डाटा एंट्री ऑपरेटर

लघु कथा

मोक्ष की प्राप्ति

राजा परीक्षित को एक सर्प ने कहा कि मैं एक वर्ष के बाद आपको काट लूंगा, जिससे आपकी मृत्यु निश्चित है। ऐसा सुनकर राजा ने धर्मगुरु व संत पुरुषों से पूछा, ''क्या यह सत्य कह रहा है ?'' सभी ने कहा, '' यही सत्य है, आपकी आयु समझो एक वर्ष रह गयी है।'' राजा ने सोचा, क्यों न मोक्ष के लिए प्रयत्न किया जाए। राजा ने हर रोज सत्य कर्म, धर्म परायण आदि कार्य में अपने आपको लगा लिया। फिर भी राजा का मन राज्य कार्य में ही लिप्त हो जाता था। फिर राजा ने सुखदेव जी से शुक्रताल नामक स्थान जो जिला सहारनपुर में है, वहां पर कथा का श्रवण किया। फिर राजा ने कहा कि मेरा मन अभी भी सांसारिक वस्तुओं में संलिप्त है। अभी भी मैं इन्हीं में लिप्त हूं। मैं न चाहते हुए भी मोह-बंधन में बंधा हुआ हूं। मन सांसारिक बंधन से मुक्त नहीं हो पा रहा है। फिर मोक्ष कैसे मिलेगा। यह करते हुए एक वर्ष बीतने को आ गया, कुछ दिन शेष रह गए हैं।

फिर राजा के पास एक संत आया और बोला, ''राजन ! आप अकेले कल वन में शिकार के लिए जाएं। हो सकता है कुछ मन बदल जाए।'' अगले दिन राजा घोड़े पर सवार हो अकेले शिकार के लिए वन में चले गए। शिकार की तलाश में राजा दिन भर भटकते रहे। घूमते-घूमते राजा घने वन में पहुंच गए। वहां पर कोई भी पशु-पक्षी नजर नहीं आ रहा था और शाम का अंधेरा भी होने लगा था। अंधेरे में राजा दिशाहीन हो गए। वह भूल गए कि किधर से आए थे और किधर जाना है। वहां से निकलने के लिए राजा कभी इधर जाते कभी उधर जाते। राजा बहुत थक गया। भूख व प्यास तथा आराम की इच्छा उन्हें सताने लगी। कोई भी आस-पास व दूर तक नजर नहीं आता। सिर्फ वन ही वन नजर आ रहा था। कुछ दूर चलने पर राजा को एक दीपक की रोशनी नजर आई। राजा वहां पर पहुंचा जिस स्थान पर दीपक जला हुआ था। उस स्थान पर बहुत अधिक बदबू आ रही थी जो असहनीय थी। लेकिन राजा भी अत्यधिक थका हुआ था। राजा को वहां पर कोई नज़र नहीं आ रहा था। तब राजा ने आवाज लगाई, ''कोई यहां पर उपस्थित है, मुझे आराम की सख्त जरूरत है।'' तब एक आदमी आया और बोला, ''मैं धर्मव्याध हूं और यहीं पर रहता हूं। यहां पर आराम की कोई वस्तु नहीं है और न ही व्यवस्था, फिर आप कैसे आराम करेंगे? यहां तो सिर्फ पशु व पक्षियों की खाल व कंकाल हैं और असहनीय बदबू है, फिर आप यहां कैसे रह पाएंगे।''

राजा ने कहा, '' मैं थक गया हूं। मैं यहीं पर आराम करूंगा। मुझे आराम का स्थान बताएं।'' धर्मव्याध ने कहा, ''यहां पर पशुओं की खाल बिछा लीजिए और सो जाइए। लेकिन यहां पर एक शर्त है कि आपको सुबह ही यहां से जाना होगा। क्योंकि यहां आने पर यहां से जाने की किसी राजा की भी इच्छा नहीं होती।'' लेकिन राजा चुपचाप सो गया और सुबह उठकर बोला, ''हे धर्मव्याध ! ऐसा कौन सा मूर्ख राजा था जिसका इस बदबू में से जाने का मन न किया हो।'' धर्मव्याध ने कहा, ''ऐसे मूर्ख राजा आप ही हैं, जो इस मृतलोक में रहना चाहते हैं। यह संसार सब नश्वर है, सभी को एक दिन यहां से जाना है, फिर भी इसमें इतनी संलिप्तता क्यों है।'' यह सुनने के बाद राजा परीक्षित को मोक्ष प्राप्त हो गया।

राम सेवक त्यागी
वरिष्ठ संचालक

चरित्र वृक्ष है, प्रतिष्ठा छाया -अब्राहम लिंकन

लघु कथा

मां का दिल

फेसबुक पर किसी की पोस्ट की हुई एक लघु कथा पढ़ रहा था जिसमें एक लड़का एक वेश्या से बहुत प्यार करता था। वह उस वेश्या के प्यार में इतना पागल था कि उसे उसके आगे कुछ भी नहीं सूझता था। समाज, रिश्तेदार, बिरादरी का उसे कोई सरोकार नहीं था। बस उसके लिए तो वह वेश्या ही सब कुछ थी और वह उसके लिए कुछ भी कर सकता था।

वह लड़का गांव में अपनी मां के साथ रहता था। मां अपने बेटे से बहुत प्यार करती थी। वह उसका इकलौता बेटा ही नहीं बल्कि सब कुछ था। लड़का भी अपनी मां को बहुत प्यार करता था। मां जानती थी कि उसका लड़का किसी वेश्या से प्यार करता है। उसने कई बार लड़के को समझाने की कोशिश की लेकिन उसने उस वेश्या का दामन नहीं छोड़ा। वेश्या को किसी की परवाह नहीं थी, लेकिन वह यह भी जानती थी कि उनके प्यार में अगर कोई अड़चन है तो वह उस लड़के की मां हो सकती है। वह उसके मंसूबों को कभी पूरा नहीं होने देगी। क्योंकि लड़का अपनी मां से बहुत प्यार करता था। इस पर वेश्या ने एक युक्ति सोची। एक दिन लड़का वेश्या से मिलने गया तो वेश्या ने उस लड़के से पूछा कि तुम मेरे लिए क्या और किस हद तक कर सकते हो। लड़का तो वेश्या के प्यार में इतना वशीभूत था कि उसने कहा कि वह जो चाहे मांग ले, वह ला कर दे सकता है। इस पर षड्यंत्र के तहत वेश्या ने लड़के से कहा कि वह अपनी मां का दिल निकालकर उसे ला दे। लड़का वेश्या के लिए इतना पागल था कि पल भर गवाएं बिना सोचे समझे मां के सीने पर वार कर दिल बाहर निकाल लिया और हड़बड़ी में जैसे ही घर से बाहर निकल रहा था तो घर की दहलीज पर ठोकर खाकर गिर पड़ा, तभी मां के दिल से आवाज आई, ''आराम से बेटा तुझे चोट तो नहीं लगी।''

कथा पढ़कर मैं सोचने लगा - क्या सचमुच सभी मांओं का दिल अपने बेटे के लिए इतना बड़ा होता है? मैंने तो अपनी मां के दिल को कभी नहीं जांचा और अब तो मां भी नहीं रही, जो उनसे ही पूछ लूं या उनके दिल के प्रेम को परखूं। तभी अचानक ही मुझे एक पुरानी घटना याद आई। बात उस समय की है जब मैं कक्षा 5 या 6 में पढ़ता था। एक दिन स्कूल से घर आते हुए रास्ते में बहुत बरसात हो गई और मैं भीग गया। घर पहुंचा तो पिताजी ने डांट लगाई, ''कितनी बार कहा है कि छतरी लेकर स्कूल जाया करो। बरसात का कुछ पता नहीं।'' चाचाजी ने भी नसीहत दी, ''कहीं रुक नहीं सकते थे। देखो, पूरी तरह भीग गए हो और किताबें भी भिगा दी।'' तभी मां तौलिया लेकर आई और मेरे सर को पोछते हुए बोली, ''इस बारिश को भी अभी आना था। थोड़ा रुक नहीं सकती थी। देखो, बच्चा पूरा भीग गया है। कहीं बीमार न पड़ जाए।'' आज जब उस घटना में छुपा मां का प्यार समझा हूं तो पोस्ट पर लिखी कथा सच्ची-सी जान पड़ती है और साबित हो जाता है कि सबकी मां का दिल अपनी औलाद के लिए एक समान होता है। बस औलाद उसे समय पर समझ नहीं पाती।

उत्तम सिंह
उच्च श्रेणी लिपिक

मधुमेह विनाशिनी मुद्रा

विधि : किसी भी ध्यान के आसन में बैठें। दाएं हाथ की मुट्ठी बना लें। बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ की कोहनी रखें। इसे एक मिनट तक रख कर जोर से दबाव दें। इसी प्रकार दूसरी ओर से दोहराएं। आधा घंटे तक एक-एक मिनट दोनों ओर से करते रहें। नित्य करें। इसे मुद्गर मुद्रा भी कहते हैं।

जो अवसरों का उपयोग करना जानते हैं वे उन्हें पैदा भी कर सकते हैं। -जॉन स्टुअर्ट

राजस्थानी वीरता

किसी कला की कमी नहीं, ना कमी है स्वाभिमान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

वीरों के पौरुष में भी यहां ईश्वर का वरदान है।
दानव के आगे नहीं झुकते, मानव का सम्मान है।।
पन्ना धाय के त्याग को देखो, भूख नहीं धन-धान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

अमरसिंह के अटल इरादे, महाराणा के तेवर हों।
जहां चेतक जैसी स्वामिभक्ति, घूंघट जैसा जेवर हो।।
जहां मीरा की पावनता से, विष बने औषधि प्राण की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

महल, हवेली, किले, झरोखें कितनी कलाएं लाया है।
इस भूमि का पत्थर लगकर, ताजमहल बन पाया है।।
याद रहेंगी सबको ये सौगातें राजस्थान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

एल.एन. मित्तल, प्रतिभा पाटिल, भैरोसिंह से नाम हुए।
तारकीन और ख्वाजाजी, यहां सूफी के सम्मान हुए।।
यहां पर आदर रामायण का, इज्जत यहां कुरान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

कालबेलिया, माड़ गायकी, कठपुतली के खेल हैं।
सबका सबसे नाता है, यहां सबका सबसे मेल है।।
चेहरे पर है भोलापन और मूंछे बड़ी हैं मान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

यहां मौसम बड़े निराले हैं, यहां मेले बड़े सुहाते हैं।
पुष्कर में गर्मी में भी गौरे सैलानी आते हैं।।
आबू की ठंडक से देखें शामें राजस्थान की।
और जैसलमेर के द्योरों में हों रातें राजस्थान की।।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

गणगोरों के मेले हैं, यहां हर महीने त्यौहार हैं।
है सम्मान बुजुर्गों का, यहां सामूहिक परिवार हैं।।
और बुश, क्लिंटन, ओबामा से मुलाकातें राजस्थान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

सब हैं एक समान वो चाहे राजा है या फकीर है।
हिंदू, मुस्लिम दोनों पूजें, वो रामदेवसा पीर है।।
सोने जैसी मिट्टी है, सुहानी राजस्थान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

चुनरी वाली साड़ी में तो लगती दुल्हन जानकी।
यहां की नारी चुनरी को ही अपना जेवर मानती।।
और चुनरी वाले साफों में बारातें राजस्थान की।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

यह सब पिछले युग की बातें अब तो अपनी बारी है।
इस भूमि की शान बढ़ाना, अपनी जिम्मेदारी है।।
पिछले युग के शूरों ने तो, सदा ही बाजी मारी है।
मरुभूमि के वीर सपूतों, अब की क्या तैयारी है।।
मेरे भाई-बंधु सुन लो, मुझ छोटे इंसान की।
कभी ना आए वो दिन, हो बदनामी राजस्थान की।।
इसीलिए सब करते रहते बातें राजस्थान की।।

हरिओम मीणा
निम्न श्रेणी लिपिक

संस्मरण

रजत जयंती वर्ष 2014

नोएडा मिंट श्रमिक संघ को विकास के पथ पर आज हम श्री कैलाश चंद जी के सभापतित्व में निरंतर अग्रसित होता देख रहे हैं; उसके रजत जयंती वर्ष में प्रवेश करते हुए हमें समयानुसार नेतृत्व करने वाले सभी महानुभावों को याद करना यहां आवश्यक लगता है, इसलिए मैं बताना चाहता हूं कि संस्थापना के समय से अब तक श्रमिक संघ में हमेशा ही नेतृत्व का चयन आंतरिक सदस्यों में से प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं सिद्धांतों के आधार पर होता रहा है। हालांकि श्रमिक संघ आम सभा के अनुमोदन के उपरांत राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (INTUC) के साथ हमेशा संबद्ध रहा है एवं राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस की नीतियों के अनुपालन में अग्रणी रहते हुए भी बाहर के नेतृत्व को कभी स्वीकार नहीं किया। यहां तक की निगमीकरण की विषम परिस्थितियों में भी आंतरिक नेतृत्व एवं आपसी समझदारी से काम लिया।

प्रथम चुनाव के उपरांत, मेरे साथ श्री के.के. शर्मा (उपसभापति) तथा श्री झंडू सिंह (सभापति) के अमूल्य योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। परम आदरणीय श्री धनी राम सिंह भाटी, श्री पवन कुमार शर्मा जी एवं श्री के.सी.शर्मा के संगठनात्मक योगदान का श्रमिक संघ हमेशा आभारी रहेगा। इन लोगों की बहुमुखी प्रतिभा ने सभापति एवं मंत्री दोनों ही पदों को लाभान्वित किया है। वयोवृद्ध साथी श्री प्रहलाद भगत, श्री करन सिंह जाटव एवं श्री हाइसेंट ज्ञानचंद जी का भी सभापति के पद पर अमिट योगदान रहा है। मंत्री के पद पर श्री अनिल कुमार मित्तल एवं श्री विरेन्द्र सिंह जी के नेतृत्व को भुलाया नहीं जा सकता है। श्री सुहेल खान (उपसभापति) एवं श्री विकास कुमार जैन (संयुक्त मंत्री) तथा श्री दिनेश चंद शर्मा जी की संगठनात्मक क्षमता को हमेशा याद किया जाता रहेगा। श्री राम सेवक त्यागी, श्री एम.सी. शर्मा, श्री के.टी. अख्तर, श्री जयराम मीना, श्री अखिलेश बाजपेयी, श्री आनंद कुमार निमेष, श्री रामरेश सिंह, श्री विनोद कुमार, श्री हरीशचंद, श्री हरीश कुमार पोखरियाल, श्री महेंद्र सिंह राणा, श्री धर्म पाल, श्री कलम सिंह, स्व. श्री गोविंद बल्लभ जोशी, श्री राजेश भारद्वाज प्रभृत दोस्तों के द्वारा विभिन्न पदों को सुशोभित करते हुए श्रमिक संघ के विकास में दिए गए इनके अमूल्य योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। श्री योगेन्द्र कुमार शर्मा एवं श्री जितेंद्र मोहन के सक्रिय योगदान को श्रमिक संघ हमेशा याद रखेगा। नेपथ्य से सहयोग करने वाले आदरणीय सर्व श्री आर.पी. एस. यादव, अभे राम, ओंकार सिंह, वेद पाल, सतेन्द्र कुमार, प्रेम सिंह खारी, संतोष कुमार शर्मा, महेश चंद, प्रदीप कुमार शर्मा, जयन ए, ए.पी.सिंह, जुल्फिकार अली, ब्रजपाल सिंह, सुभाषचंद, अजय कुमार शाक्य, शीशराम पाल आदि का नाम श्रमिक संघ के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज किया जाएगा। संस्थापक सदस्यों में सर्व श्री प्रेम बल्लभ जोशी जी (सभापति), श्री सुनील त्यागी (मंत्री) तथा श्री एम.एस.वर्मा (संयुक्त मंत्री) का योगदान भी अतुलनीय रहा है।

इसके अलावा, श्रमिक संघ के नेतृत्व को तराशने में कुशल शिल्पी का कार्य करने वाले महानुभावों को याद किए बिना संस्मरण अधूरा रहेगा। सर्वाधिक मेहनत करने वाले शिल्पियों में याद किया जाता है परम श्रद्धेय श्री आर. रामदास, श्री जी.आर. कहाते, श्री एस.डी. स्वामी, श्री वी.के.खोसला, श्रीमती उषा निगम, श्री एस. बागची (कार्यवाहक), श्री एस.डी. दाधीच, श्री ए.एम.गुरहा (कार्यवाहक), श्री पी.के. दास, श्री अश्विनी कुमार, श्री विश्वजीत बर्मन, श्री सत्य प्रकाश वर्मा, श्री एम.सी. बैलप्पा प्रभृत महाप्रबंधकों को प्रशासनिक उपचारों के द्वारा तथा श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, तपन कुमार कुंडु, गोरखनाथ यादव को आत्मीय संबंधों के आधार पर

उत्पादन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए याद किया जाएगा। डा. आनंद स्वरूप, श्री सुखवीर सांगवा, कैप्टन डी. दत्ता, जे. सान्याल, एम.डी.के. राव, ए.एस. नैनेगली, बी.के. ठाकुर, डी.के. ढिल्लोर के योगदान भी श्रमिक संघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाएगा।

नोएडा मिंट श्रमिक संघ का गठन सितंबर, 1989 में एक आम सभा के माध्यम से किया गया था एवं 17-10-1989 के दिन माननीय रजिस्ट्रार श्री जय शंकर प्रसाद पाण्डेय द्वारा ट्रेड यूनियन अधिनियम (1926 के नं. 16) के अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पंजीकरण संख्या 7468 प्रदान करते हुए पंजीकृत किया गया।

- सदस्यों में एकता, सेवा, भाईचारा और सहयोग की भावना उत्पन्न करना और उनकी भलाई के उपाय एवं साधन प्रस्तुत करना।
- सदस्यों में कर्तव्य-पालन संबंधी अनुशासन एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना तथा उनकी कार्य कुशलता एवं उपयोगिता बढ़ाने का प्रयत्न करना।
- सदस्यों की हर प्रकार से दशा सुधारने तथा बेहतर बनाने का प्रयत्न करना और उद्देश्य को कार्यान्वित करने के लिए ऐसे लाभ की व्यवस्था करना जो यूनियन के कोष एवं प्रस्तुत परिस्थितियां देखते हुए संभव हो।
- सदस्यों की हर समस्या दूर करना, मालिकों तथा उनके कर्मचारियों के बीच सौहार्द बढ़ाना, आपसी झगड़े यथासंभव शांतिपूर्ण समझौते से तय कर लेना जिससे काम में अनावश्यक रुकावट न होने पाए।
- यूनियन द्वारा स्वीकृत हड़तालों की अहिंसात्मक और शांतिपूर्ण साधनों द्वारा सुचारू रूप से चलाना और उनकी शीघ्र और संतोषजनक समाप्ति के लिए प्रयत्न करना।
- श्रमिकों की सुरक्षा के लिए बने कानूनों को कार्यान्वित कराने तथा ऐसे कानूनों को बनवाने का प्रबंध करना जिससे श्रमिकों की भलाई हो।
- सदस्यों अथवा उनके आश्रितों के लिए शिक्षा संबंधी सामाजिक या धार्मिक सहायता की (जिसमें मृत सदस्यों के संस्कारों या धार्मिक कृत्यों संबंधी व्यय की सहायता भी सम्मिलित है) व्यवस्था करना।
- झगड़े के शीघ्र निपटान के लिए भारतीय श्रम कार्यालय अथवा संबंधित सरकारी अधिकारियों से सहयोग करना।
- सदस्यों के हितों की रक्षा करने एवं उनके लिए हितकारी कार्यों में वृद्धि करने के लिए दूसरे ऐसे उपाय काम में लेना जो यूनियन के उद्देश्य के विपरीत न हों।
- उद्योग अनुशासन संहिता तथा श्रम सम्मेलनों के प्रस्तावों का पालन करना।
- अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन संगठनों से संबंध स्थापित करना।

रजत जयंती वर्ष 2014 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ सुधी पाठकगण से विनम्र आग्रह करता हूं कि श्रमिक संघ अपने उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति में कितना सफल हो सका; वे स्वयं विचार करें। आगामी अंकों में सुझाव के रूप में भी लेख प्रकाशित किया जा सकता है कि यदि कोई हो तो असफल उद्देश्यों को कैसे पूरा किया जा सकता है। प्रजातांत्रिक प्रक्रिया में श्रमिक संघ को विकास मार्ग पर निरंतर अग्रगामी रखने के लिए प्रत्येक सदस्यों की भागीदारी परमावश्यक है।

धन्यवाद।

रामाशीष प्रसाद
महासचिव
नोएडा मिंट श्रमिक संघ

आज का भारत

आजादी का जश्न है, छठें दशक के नाम।
घायल है इंसानियत गली-गली कोहराम।।
लोकतंत्र के वृक्ष की जड़े रही हैं सूख।
जनता को केवल मिली, बेकारी और भूख।।
कौन हुआ स्वाधीन है, किसने भरी उड़ान।
कुटिया को दीपक नहीं, बढ़ी महल की शान।।
मंदिर-मस्जिद के लिए बहा रहे हैं खून।
केवल वोटों के लिए साजिश भरा जुनून।।
नकली चेहरे ही मिले, यहां वहां सब ठौर।
बाहर से कुछ और हैं, अंदर से कुछ और।।
परंपराएं मिट रही, बेशर्मी के हाथ।
मदिरा की बोतल लिए, पिता-पुत्र हैं साथ।।
बढ़ी नग्नता इस तरह, सभी रह गए दंग।
नजर न उठती बाप की, बिटिया हुई पतंग।।
रिश्तों में खुशबू नहीं, कौन उठाए आवाज़।
बनावटी हर बात है, बनावटी अंदाज।।

राजेश कुमार शर्मा
कनिष्ठ तकनीशियन

श्रद्धांजलि

स्व. श्री गोविन्द बल्लभ जोशी
नियुक्ति : 21-07-1988
निधन : 16-05-2014

स्व. श्री कनक सिंह त्यागी
नियुक्ति : 20-08-1988
निधन : 18-03-2014

प्रतिक्रिया

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनिरत्न श्रेणी-1 सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Miniratna category -I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

सेवा में,

श्री एम.सी.बैलप्पा
महाप्रबंधक
भारत सरकार टकसाल
नोएडा

विषयः नगर राजभाषा पुरस्कार संबंधी।

महोदय,

यह बड़े हर्ष का विषय है कि नोएडा टकसाल द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा द्वारा राजभाषा शील्ड वर्ष 2012-13 के तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

यह पुरस्कार इकाई प्रबंधन के राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन तथा सभी अधिकारियों विशेषतः हिन्दी कक्ष के अधिकारी एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास का सुखद परिणाम है एवं आशान्वित हूँ कि इकाई में राजभाषा संबंधी यह प्रगति निरंतर बनी रहेगी।

अंत में निगम कार्यालय की ओर से टकसाल प्रबंधन, सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस उपलब्धि के लिए पुनः बधाई।

भवदीय
बी.जे. गुप्ता
(बी.जे.गुप्ता)
उपमहाप्रबंधक (औ.सं.)